TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

हिन्दी दिवस पर विशेष पेज-3

शाहजहाँपुर | वृहस्पतिवार | 14 सितम्बर 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2 | अंक :28 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

जी20 सम्मेलनः विश्व मंच पर बढ़ी भारत की साख

अनेक मुद्दों पर सर्वसम्मति एक बड़ी उपलब्धि

नई दिल्ली एजेंसी। भारत की अध्यक्षता में नई दिल्ली में हुए दो दिवसीय शिखर सम्मेलन में जारी घोषणापत्र के सभी 83 बिंदुओं पर सर्वसम्मति से मुहर लग गई। घोषणा पत्र में परमाणु हमलों, परमाणु हमले की धमकी का जिक्र करने के साथ आह्वान किया गया कि सभी देश अंतरराष्ट्रीय कानून का पालन करते हुए दूसरे देश की क्षेत्रीय अखंडता, संप्रभुता एवं अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून का पालन करें।

नई दिल्ली घोषणापत्र पर सहमति बनना इसलिए भी अहम है कि पिछले नौ महीनों के दौरान जितनी भी जी-2० की मंत्रिस्तरीय बैठकें हुईं, उनमें साझा घोषणापत्र जारी नहीं हो पाया था। लेकिन इस घोषणा पत्र में पिछले नौ महीनों के दौरान भारत की ओर से रखे गए लगभग सभी प्रस्तावों को शामिल किया गया है, जिस पर सबने सहमति जताई है।

इस सम्मेलन की एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि भारत ने अफ्रीकी देशों के संगठन अफ्रीकी संघ को जी-2० का सदस्य बनाने की जो पहल की, उसमें भी उसे सफलता मिली। अफ्रीकी संघ 55 देशों का समूह है, जिसकी आबादी करीब डेढ़ अरब है। यह एक बहुत बड़ा मुक्त व्यापार क्षेत्र है, जहां भारतीय उत्पादों को बाजार मिल सकता है। जी-2० में अफ्रीकी संघ को शामिल करना स्वागत योग्य कदम है। इसके अलावा, भारत ने ग्लोबल साउथ यानी एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के विकासशील एवं गरीब देशों के हितों का ध्यान रखने का मुद्दा उठाया, उसे भी स्वीकार किया गया।

इस घोषणापत्र में सिर्फचीन को ही सख्त संदेश नहीं दिया गया है, बल्कि पाकिस्तान के लिए भी सख्त संदेश है। घोषणा पत्र में कहा गया है कि आतंकवाद को किसी भी रूप में स्वीकार नहीं किया जाएगा। घोषणा पत्र में कहा गया है कि आतंकवादी समूहों को सुरक्षित आश्रय, संचालन की स्वतंत्रता, आवाजाही और रंगरूटों की भर्ती के साथ-साथ वित्तीय, भौतिक या राजनीतिक मदद रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग की बढ़ाने का प्रयास किया जाना चाहिए। इसके अलावा, इस सम्मेलन में अमेरिका सहित कई देशों के साथ हमारे द्विपक्षीय समझौते हुए हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है-भारत से पश्चिम एशिया और यूरोप को जोड़ने वाले भारत-पश्चिम एशिया-यूरोप आर्थिक गलियारा बनाए जाने की घोषणा। प्रधानमंत्री मोदी ने इस आर्थिक गलियारे की घोषणा करते हुए कहा कि इससे वैश्विक बुनियादी ढांचे, निवेश के लिए साझेदारी, आवाजही और सतत विकास को नई दिशा मिलेगी। भारत ने वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन की शुरुआत करते हुए सभी देशों से इससे जुड़ने का आह्वान किया। जिसे वैश्विक स्तर पर लागू करने के लिए जी-2० के राष्ट्राध्यक्ष सहमत हो गए हैं।

भारत की अध्यक्षता में जी-2० सम्मेलन की सफलता ने यह साबित कर दिया कि भारत वैश्विक कूटनीति का नेतृत्व करने में पूरी तरह से सक्षम है। अफ्रीकी संघ को जी-2० में शामिल करने और ग्लोबल साउथ के देशों के हितों का मुद्दा उठाकर भारत ने वैश्विक जगत में अपना कद ऊंचा किया है। सम्मेलन में सामाजिक-आर्थिक विकास, हरित ऊर्जा से लेकर वैश्विक खाद्य संकट एवं वैश्विक आर्थिक संस्थानों के संचालन ढांचे पर भारत के पक्ष को स्वीकृति मिली है।

24 को राघव चड्ढा की दुल्हनिया बनेगी परिणीति

उदयपुर के लीला पैलेस में लेंगे सात फेरे

नई दिल्ली एजेंसी। आखिरकार फि ल्म अभिनेत्री परिणीति चोपड़ा हमेशा-हमेशा के लिए आम आदमी पार्टी के सांसद राघव चड्ढा की होने के लिए तैयार हैं। 24 सितम्बर को सात फेरे लेकर दोनों एक-दूजे के हो जाएंगे। परिवार वालों के साथ फैन्स भी जश्न की तैयारी में जुट गए है। दोनों 24 सितंबर को शादी रचाने वाले हैं और इस बात की पुष्टी भी हो चुकी है। परिणीति और राघव की शादी का इन्विटेशन कार्ड सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है।

परिणीति और राघव ने अपनी शादी के लिए उदयपुर का द लीला पैलेस चुना है। इसके बाद जो शादी की रिसेप्शन पार्टी होगी, उसके लिए द ताज लेक लोकेशन चुनी गई है। 23 सितंबर को परिणीति की चूड़ा सेरेमनी का आयोजन महाराजा सुईट में होगा। परिणीति और राघव, दोनों के लिए ही 24 सितम्बर का दिन खास होने वाला है। इस दिन विवाह उत्सव की शुरुआत दोपहर 1 बजे से होगी, जिसमें राघव की सबसे पहले सेहराबंदी ताज लेक पैलेस में होगी। फिर 2 बजे बारात चढ़ेगी। लीला पैलेस में परिणीति और राघव सात फेरे लेंगे, दोनों यहां जन्मों-जन्मों तक साथ निभाने की कस्में खाएंगे। फिर दोपहर साढ़े 3 बजे जयमाला, फेरे होंगे दोपहर 4 बजे और विदाई होगी साढ़े 6 बजे। और आखिर में इस दिन रिसेप्शन पार्ची होगी जो लीला पैलेस कोर्टसार्ड में रखी गई है। रात साढ़े 8 बजे से यह शुरू होगी जो देर रात तक चलेगी।

47 साल बाद नोएडा की तर्ज पर झांसी में बनेगा बीडा

कैबिनेट बैठक के बाद वित्तमंत्री सुरेश खन्ना ने दी जानकारी

लोक पहल

लखनऊ। योगी सरकार ने बुंदेलखंड क्षेत्र में औद्योगीकरण को रफ्तार देने के लिए 'बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण' के गठन को मंजूरी दी है। बैठक के बाद वित्त व संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने पत्रकारों को यह जानकारी दी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंत्रिपरिषद की बैठक संपन्न हुई। इसमें बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण के गठन को मंजूरी दी गई। बैठक के बाद वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि 1976 में नोएडा का गठन हुआ था। इस दौरान टाउनशिप विकसित किए जाने की बात कही गई थी। इसी तर्ज पर बुंदेलखंड मुख्यमंत्री औद्योगिक क्षेत्र विस्तारीकरण एवं नई औद्योगिक क्षेत्र प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत इसकी शुरुआत की गई है। उन्होंने कहा कि झांसी में बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण द्वारा यह विकसित किया जाएगा। 47 साल के बाद यह पहला मौका है, जब इस प्रकार का कोई औद्योगिक विकास प्राधिकरण गठित हो रहा है। इसमें 33 राजस्व गांवों की 35 हजार एकड़ जमीन ली जा रही है। इसकी कीमत 6 हजार 312 करोड़ रुपये है। वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि यह अपने आप में एक बड़ा निर्णय है। इससे झांसी के आसपास का जितना क्षेत्र है, उसका व्यापक स्तर पर विकास होगा। यह यूपी के विकास में बड़ा योगदान करेगा। झांसी रेलवे कनेक्टिविटी का बड़ा सेंटर है और इसके लिए झांसी-ललितपुर मार्ग, झांसी-ग्वालियर मार्ग पर जमीन ली जा रही है।

उप्र में बिना बस्ते के स्कूल जाएंगे बच्चे, माह के दो शनिवारों को रहेगी छुट्टी

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में बच्चों के सर से पढ़ाई का बोझ कम होने वाला है। एक ओर जहां बच्चे बिना बस्ते के भी स्कूल जा सकेंगे वहीं उन्हें माह के दो शनिवारों को छुट्टियां का भी मौका मिलने वाला है। प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को लेकर उठने वाले सवालों के बीच नई शिक्षा नीति के तहत किये जाने बदलाव कितने कारगर सिद्ध होंगे यह आने वाला समय ही बतायेगा। बच्चों को अब बिना बस्ते के भी स्कूल जाने को मिलेगा। बच्चों को पढ़ाई के प्रेशर से छुटकारा मिलने वाला है। साथ ही बच्चों को अब स्कूलों में पढ़ाई भी कम समय करनी पड़ेगी। उप्र सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने का पूरा मन बना लिया है। इसके लिए सरकार ने शिक्षा विभाग को नई नियमावली तैयार करने का आदेश भी दे दिया है। इसके तहत यूपी के स्कूलों में बच्चों की पढ़ाई के समय की सीमा तय की गई है। यानी अब सप्ताह में सिर्फ 29 घंटे ही बच्चे क्लास में बैठेंगे। छात्रों को अब हर रोज सिर्फ5 से 5.3० घंटे की पढ़ाया जाएगा। वहीं एक महीन के दो शनिवार उनकी छुट्टी रहेगी औ दो शनिवार को सिर्फढाई घंटे ही क्लास में पढ़ाई होगी। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत योगी सरकार ने शिक्षा विभाग को नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क (एनसीएफ) के तहत ही नियमावली तैयार करने का आदेश दिया है। इस नियम के लागू होने के बाद अब सामान्य विषयों के क्लास का समय 35 मिनट हो जाएगा। वहीं साल में अलग-अलग दिन मिलाकर कुल 1० दिनों तक छात्र बिना बस्ते के स्कूल जाएंगे। नई शिक्षा नीति से बच्चों को खेलने का समय मिलेगा। उन्हें अपनी क्रिएटिविटी बाहर लाने का मौका मिलेगा।

विधानसभा पर आतंकी हमला नाकाम

मॉक ड्रिल के दौरान विधान भवन की इमारत पर हेलीकॉप्टर से उतरे कमांडो, हमले पर किया नियंत्रण

लोक पहल

लखनऊ। उप्र विधानसभा भवन पर आतंकी हमले को यूपी पुलिस व एनएसजी के जवानों ने नाकाम कर दिया। मॉक ड्रिल के दौरान पुलिस व एनएसजी के जवानों ने आतंकी हमले को नाकाम करते हुए यह साबित कर दिया कि वे किसी भी आतंकी हमले को बेअसर करने और आतंकियों को धूल चटाने के लिए तैयार हैं। लखनऊ के विधानभवन में की गई मॉक ड्रिल में आतंकी हमले की सूचना पर पल भर में ही कमांडो पहुंचे और विधान भवन के ऊपर हेलीकॉप्टर से उतरे।

उन्होंने कुछ ही मिनट में अपनी पोजिशन लेते हुए हालात को पूरी तरह नियंत्रण में ले लिया। इसके पहले भी लखनऊ में ऑपरेशन 'गांडीव फाइव' के तहत शहर के प्रमुख सार्वजनिक स्थानों पर मॉक ड्रिल की गई थी। अचानक से शुरू हुई मॉक ड्रिल से लोग थोड़ा घबरा गए। हालांकि, कमिश्नरेट पुलिस ने बाकायदा एक अपील जारी कर ड्रिल के बारे में सभी को जानकारी दी थी जिससे कि दहशत की स्थिति न बने। मॉक ड्रिल लखनऊ जंक्शन के प्लेटफर्म नंबर छह, आलमबाग बस अड्डा, लोकभवन, लुलु मॉल और पलासियो मॉल में हुई। मॉक ड्रिल के दौरान सीएम योगी आदित्यनाथ पुलिस मुख्यालय में मौजूद रहे व पूरी कार्यवाही को देखा व उन्होंने पूरी प्रक्रिया की जानकारी ली। इस मौके पर उनके साथ कई मंत्री भी मौजूद रहे। लखनऊ के जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगवार भी मौजूद रहे।

भारतीयों को एकता के सूत्र में पिरोती है हिन्दी

■ एसएस कालेज में हिन्दी दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय के हिंदी विभाग की ओर से हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया था। हिन्दी दिवस के दिन समापन के अवसर पर 'हिंदी का भविष्य, भविष्य की हिंदी' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संगीत विभाग की डॉ प्रतिभा सक्सेना के निर्देशन में छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना से हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भौतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष शिशिर शुक्ला ने कहा कि 'हमें विश्व पटल पर हिंदी को स्थापित करने के लिए एकजुट होकर प्रयास करना चाहिए। हिंदी से भारत के जन जन का भावनात्मक लगाव है। यह महज भाषा नहीं बल्कि भारतीयों को एकता के सूत्र में पिरोती है। विशिष्ट अतिथि प्रो. पूनम ने कहा कि 'भारत में विविध भाषाएं बोली जाती हैं, किंतु हिंदी भारत की जनभाषा के रूप में सर्वोपरि स्थान पर विद्यमान है।' विशिष्ट अतिथि इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ विकास खुराना ने कहा कि 'हम सब पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के कारण अपनी संस्कृति को शनैः-शनैः भूलते जा रहे हैं। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो .राकेश कुमार आजाद ने हिन्दी दिवस पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के लिए बधाई दी। कार्यक्रम में डॉ. कविता भटनागर, डॉ अंजू लता अग्निहोत्री ने काव्य पाठ प्रस्तुत किया। शोधार्थी गरिमा पांडे, वागीश कुमार, रवि, शोभित कुमार, प्रभा पांडे, साक्षी सिंह, मुस्कान, सुमित जान्हवी शिवांगी ने भी अपनी कविताएं प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम का संचालन सारस्वत पांडे ने किया। कार्यक्रम का संयोजन प्रमोद कुमार यादव एवं डॉ श्रीकांत मिश्रा ने किया। इस अवसर पर डॉ सुजीत कुमार वर्मा, डॉ दुर्ग विजय, डॉ संदीप कुमार वर्मा, डॉ मृदुल पटेल, डॉ दीपक सिंह, डॉ सुखदेव, डॉ अखंड प्रताप सिंह, डॉ पवन गंगवार, डॉ प्रतिभा शर्मा, डॉ राजनंदन राजपूत सहित महाविद्यालय के आचार्य गण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। अंत में हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डा. आलोक मिश्रा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ के मेधावियों को एलआईसी ने किया सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। भारतीय जीवन बीमा निगम की ओर से मनाए जा रहे 'सेवा सप्ताह' के तहत श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ सीनियर सेकेंडरी स्कूल में कक्षा नर्सरी से कक्षा 12 तक सभी कक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को 'एकेडमिक एक्सीलेंस अवार्ड' से सम्मानित किया। इस अवसर पर कक्षा नर्सरी से कुशाग्र सक्सेना, केजी से माधव सक्सेना, प्रथम से अचिंत्य आर्य, दो से ध्रुव प्रताप सिंह, तीन से वर्धन अग्रवाल, चार से स्तुति गंगवार, 5 से तेजस भदौरिया, 6 से अनुष्का गुप्ता,7 से शिवओम वर्मा , 8 से प्राप्ति अरोड़ा, 9 से हर्षजीत सिंह, 1० से आस्था कटियार, 11 से यश गुप्ता, 12 से सिद्धांत तिवारी को एलआईसी के शाखा प्रबंधक एस के सिंह ने पुरस्कृत किया। साथ ही विद्यालय की वरिष्ठ शिक्षिका पुष्पलता दयाल को एलआईसी की ओर से 'गुरु सम्मान' से नवाजा गया। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्या डॉ मेघना मेंहदीरत्ता ने सभी का आभार व्यक्त किया। आयोजन में उपशाखा प्रबंधक अतुल सक्सेना, विकास कुमार शोभित अग्रवाल, ममता सिंह आदि का योगदान रहा।

सुमन पाठक 'कभीकवि काव्यरश्मि सम्मान' से सम्मानित

■ लखनऊ के हिन्दी संस्थान सभागार में किया गया सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। उप्र हिन्दी संस्थान ने आयोजित सम्मान समारोह में शाहजहांपुर की कवयित्री सुमन पाठक को उनके काव्य संग्रह 'जीवन और प्रेम' के लिए उन्हें 'कभीकवि काव्यरश्मि सम्मान' 2०23 से सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह की मुख्य अतिथि प्रख्यात लेखिका डा. अमिता दुबे ने उन्हें यह सम्मान प्रदान किया। इस मौके पर हिन्दी संस्थान की प्रधान सम्पादक डा. अमिता दुबे ने कहा कि हिन्दी अस्मिता, व्यवहार एक दूसरे से सम्पर्क करने के साथ ही साहित्य की भाषा है। इस मौके पर यादों के कुसुमन व जीवन और प्रेम पुस्तक का विमोचन भी किया गया। हिन्दी संस्थान के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में आयोजक अनिल सुरेश मिश्रा ने बताया कि 11००० रूपये का पुरस्कार प्रयागराज के कवि शेषमणि शर्मा 'शेष' को दिया गया। 51०० रूपये का पुरस्कार चित्तौड़गढ़ के कवि राधेश्याम जछिया को मिला। इसके अतिरिक्त विभिन्न राज्यों के 31 रचनाकारों को सम्मानित किया गया। इसमें विशाल श्रीवास्तव, प्रखर मिश्रा, राघुव दुबे, वीना अवस्थी, सुमन पाठक, भंवर सिंह देवगांव, बीनेश सिंह, रामनरेश रमन, सौरभ पांडे, डा नीरज सिन्हा, सुनील श्रीवास्तव, सतीश श्रीवास्तव, पुनीत पांचाल, रविन्द्र कबीर आदि शामिल रहे।

एसएस कालेज में संगीत विषय में प्राज्वल भारद्वाज ने किया टाप, दूसरे स्थान पर रहे शिवांश तिवारी

प्राचार्य ने प्राध्यापक डा. प्रतिभा को किया सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में संगीत विषय में इस वर्ष प्राज्वल भारद्वाज ने टाप किया है जबकि दूसरे स्थान पर शिवांश तिवारी रहे। बता दें कि महाविद्यालय के संगीत विभाग के विद्यार्थी गत कई वर्षों से लगातार बेहतर प्रदर्शन करते आ रहे हैं। वर्ष 2०18 में सरिता देवी ने प्रथम व साधना वर्मा द्वितीय स्थान पर रहीं। 2०19 में नूतन अग्रवाल ने पहला व खुशी गुप्ता ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। 2०2० में प्रिंस रस्तोगी पहले और अंजली मिश्रा स्थान पर रही। 2०21 में रजनी पहला स्थान हासिल किया। 2०22 में कांति देवी ने प्रथम स्थान हासिल किया। विभाग की इस उपलब्धि पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आर. के. आजाद ने विभाग की प्राध्यापक डा. प्रतिभा सक्सेना को सम्मानित किया। संगीत विभाग के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद, सचिव डा. अवनीश मिश्रा, कला संकाय प्रभारी डा. आलोक मिश्रा व विभागाध्यक्ष डा. कविता भटनागर ने उन्हें बधाई और शुभकामनाएं दीं।

डीएम ने प्राथमिक विद्यालय का किया आकस्मिक निरीक्षण

लोक पहल

शाहजहाँपुर। जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह ने प्राथमिक विद्यालय अहमदपुरा का आकस्मिक निरीक्षण कर व्यवस्थाएं देखी। उन्होंने शिक्षकों एवं छात्रों की उपस्थिति तथा प्रतिदिन दिये जाने वाले भोजन की गुणवत्ता एवं साफ-सफाई का निरीक्षण किया। इस दौरान जिलाधिकारी ने बच्चों से पहाड़े भी सुने।

उन्होने शिक्षकों को निर्देशित किया कि अन्य विषयों के साथ अंग्रेजी पर भी विशेष ध्यान दें। सभी बच्चों को स्वच्छ आदतें अपनाने हेतु भी प्रेरित करें और जो बच्चे प्रतिदिन निर्धारित ड्रेस में स्कूल नही आते है, उनके माता पिता से बात करके बच्चों को प्रतिदिन निर्धारित ड्रेस में भेजने हेतु प्रेरित करें।

इस दौरान उन्होंने मिड डे मील की गुणवत्ता को भी चेक किया। भोजन की गुणवत्ता पर असंतुष्टि व्यक्त की, उन्होने कड़े निर्देश दिये कि मिड-डे-मील में निर्धारित मैन्यु के अनुसार ही भोजन दिया जाये। उन्होने विद्यालय परिसर एवं उसके आस-पास साफ-सफाई के बेहतर प्रबन्ध सुनिश्चित किये जाने हेतु भी निर्देशित किया।

19 को विराजेंगे मठिया के महाराज

शाहजहांपुर (लोक पहल)। 19 सितम्बर को गणेश पैलेस में पूरे विधि विधान के साथ मठिया के महाराजा विराजमान होंगे। कार्यक्रम के आयोजन को लेकर एक बैठक मनोज शर्मा के निवास स्थान पर हुई जिसमें यह तय किया गया की 19 सितंबर को मठिया के महाराजा पूरे विधि विधान से गणेश पैलेस शर्मा के डेरे में विराजमान होंगे विराजमान होने से पूर्व आयोजन समिति से जुड़े अरुण रस्तोगी के बक्सरिया स्थित आवास से एक शोभा यात्रा जो छोटा चौक चौराहे होते हुए आयोजन स्थल पर आएगी। आयोजन 19 सितंबर से शुरू होकर 28 सितंबर तक चलेगा। इसमें प्रत्येक दिन अलग-अलग पूजन होगा। 27 को हवन भंडारा व भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा। 28 को गणपति विसर्जन होगा। उक्त जानकारी देते हुए मठिया के महाराजा आयोजन समिति के प्रवक्ता सुचित सेठ ने बताया विसर्जन में कई जगह दही हांडी का भी कार्यक्रम होगा। गणपति बप्पा रोज सुबह 7 बजे से 12 बजे तक शाम को 4 बजे से रात्रि 11 तक दर्शन देंगे। बैठक में महेंद्र कपूर, विमल कपूर, अंकुर कटियार, मनोज अग्रवाल, सुधीर गुप्ता, पार्षद शेखर रस्तोगी, पार्षद पति अमित वैश्य, प्रदीप मेहरोत्रा, सुनील बंसल, सुधांशु शुक्ला, शानू शर्मा, अबतार सिंह कुटेजा, मोनू सिंह कुटेजा, रानू शर्मा, चिराग गुप्ता, शिवांश गुप्ता व रोशन कनौजिया आदि उपस्थित रहे। अंत में सभी का आभार मनोज शर्मा ने व्यक्त किया।

लंबी कूद में आदित्य ने जीता गोल्ड मेडल

शाहजहाँपुर (लोक पहल)। चंडीगढ़ में आयोजित पांचवी ग्रैंड प्रिक्स नेशनल एथलेटिक मीट मे शाहजहाँपुर के आदित्य कुमार सिंह ने शानदार प्रदर्शन करते हुए लंबी कूद 7.62 मीटर मे गोल्ड मेडल जीत के जनपद का नाम रोशन किया। आदित्य अरविंद कुमार सिंह के पुत्र हैं। आदित्य खेलो इंडिया की ओर से केरल के स्पोर्ट हॉस्टल में कोचिंग ले रहा है। आदित्य को जनपद रत्न से भी सम्मानित किया जा चूका है।

इस अवसर पर मुकेश सिंह परिहार, आदित्य प्रताप सिंह, मंटू सिंह, मुनीश सिंह परिहार, आरएन सिंह, कामेश्वर सिंह, राम बिहारी सिंह, हर्षित सिंह, चंद्र शेखर सिंह, राम मोहन अग्निहोत्री, दिनेश सिंह, सुधीर सिंह, अंकुर गांधी ने हर्ष व्यक्त किया।

नगर आयुक्त ने किया जलभराव वाले स्थानों का निरीक्षण, कराया छिड़काव

लोक पहल

शाहजहांपुर। नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा शहर में अतिवृष्टि के कारण हुए जलभराव को लेकर मिल रही षिकायतों के निस्तारण के लिए शहर के विभिन्न इलाकों में निरीक्षण किया। इस दौरान पार्षद रूपेश कुमार वर्मा के साथ नगर आयुक्त ने जलभराव वाले स्थलों को देखा।

इस मौके पर नगर आयुक्त ने आमजन की सुविधा के लिए अपनी मौजूदगी में जलभराव वाले स्थलों पर एंटीलार्वा छिड़काव कराया। साथ ही निर्देशित किया कि पम्पिंग सेट लगाकर शीघ्र ही पानी निकाला जाए एवं फॉगिंग छिड़काव के कार्य को भी कराये जाएं। इसके अतिरिक्त क्षेत्र में भ्रमण कर सफाई की स्थिति को भी देखा तथा निर्देशित किया कि साफ-सफाई के कार्य को और अधिक बेहतर किया जाए। निरीक्षण के समय नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार मिश्रा, सफाई एवं खाद्य निरीक्षक हरवंश दीक्षित आदि मौजूद रहे।

हिंदी साहित्य में संगीतात्मकता

डा. कविता भटनागर

साहित्य और संगीत एक दूसरे के पूरक है, साहित्य अथवा काव्य के रसानुसार श्रेष्ठ संगीत का निर्माण विभिन्न सांगीतिक कालो में पाया गया है, चाहे वह कालिदास कृत कुमारसम्भव, रघुवंश, मेघदूत, ऋतुसार हो, या जयदेव कृत गीत गोविंद, सूरदास कृत सूरसागर हो या फिर तुलसीदास कृत गीतावली या महाकाव्य रामचरितमानस हो, आधुनिक युग के कवियों व गीतकारों के गीतों व रचनाओं में संगीत व साहित्य का श्रेष्ठ संयोजन व रसाभिव्यक्ति है। जो हमारे भारतीय संगीत में सांस्कृतिक विरासत के रूप में सुरक्षित है। साहित्य व उसके रसानुसार संगीत ने समाज को सदैव ही नवजीवन व एक सार्थक दिशा प्रदान की है। संगीत के विकासक्रम में वैदिक काल की पवित्रता, रामायण और महाभारत काल की सात्विकता, हिंदू राजाओं की स्थिरता, मुगलों की अय्याशी और कलापरस्ती, संतो की शक्ति, राजे रजवाड़ों की रंगीनी, अंग्रेजो की उपेक्षा और स्वतंत्र युग के संघर्ष और चेतना का प्रभाव हमे दिखाई पड़ता है। कलाकारों और साहित्यकारों ने युगों से जो कुछ

पाया उसे अपनी कला में पिरोकर समाज को दिया है। वास्तव में श्रेष्ठ साहित्य जहां संगीत को श्रेष्ठ बनाता है, वही समाज को नई दिशा भी प्रदान करता है।

हिन्दी हमारी चेतना है

हिन्दी हमारी चेतना है,
राष्ट्र का अभिमान है।
देवनागरी लिपि है इसकी
संस्कृत उद्धृत भाषा है ये॥
सरल सुगम्य सुबोध हिंदी
वैज्ञानिक भाषा भी ये।
स्वर व्यंजन का सुगम सरगम
उपमा अनुपमेय देता इसे ॥
मानकीकृत सरस भाषा
तत्सम तत्भव युक्त है।
ग्राह्यता सदगुण अनोखा
सतत प्रगति पथ अग्रसर ॥
विदेशी भाषाओं से भी
इसे न किंचित ऐतराज है ।
चिर वर्धमान है हिंदी
एकता की धार है॥
नाद, ध्वनि अरु बिंबमय
गीत की भाषा है ये
प्रगतिपथ के साथ बहती
राष्ट्र की पहचान है॥
सूर कबीर जायसी तुलसी
सहज अपनाते रहे।
भारतेंदु हजारी औ द्विवेदी
सरस महकाते रहे॥
वाणी का वरदान हिंदी
संस्कृति का गान है।
अस्मिता और शान हिंदी
राष्ट्र का अभिमान है॥
संस्कृत आंग्ल फारसी
शब्दों को आंचल में समेटे।
गंगा जमुनी तहजीब की
सशक्त अभिव्यक्ति है हिंदी॥
राजभाषा पद सुशोभित
राष्ट्रभाषा की हकदार हिंदी॥
अब प्रतीक्षा उस समय की
जब हर दिवस हो नाम हिंदी॥

पूर्णिमा बेदार श्रीवास्तव
लखनऊ

हिंदी की खाइए और अंग्रेजी की गाइए

प्रभुनाथ शुक्ल

गजोधर भईया हिंदी की उन्नति को लेकर बेहद परेशान रहते हैं। बेचारे हिंदी के विकास में खुद का विकास खोजते हैं। सितंबर का पुण्य मास लगते ही उनका मुरझाया चेहरा खिल उठता है। उनके भीतर सुस्त पड़ा संवृद्ध हिंदी का सपना कुलाचें मारने लगता है। क्योंकि पवित्र मास का दूसरा पखवाड़ा हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसका इंतजार अनेका नेक हिंदी प्रेमियों को रहता है। जिस तरह पितृपक्ष में पितरों का तर्पण पखवाड़ा होता ठीक उसी तरह अपनी बेचारी हिंदी को याद किया जाता है।

14 सितंबर से हिंदी का श्राद्ध पखवारा मनाया जाता है। इस दौरान हिंदी विकास को लेकर बड़ा शोर रहता है। सरकारी कार्यालय और बैंकों में हिंदी को संवृद्ध करने के लिए बड़े-बड़े पोस्टर लगते हैं। सभी को हिंदी में कार्य करने की नसीहत दी जाती है। इस दौरान अनेक हिंदी सेवियों को सम्मानित किया जाता है। यह ऐसे लोग रहते हैं जिनका प्रेम सिर्फमंच और सोशलमिडिया तक हिंदी प्रेम दीखता है। क्योंकि सितंबर माह आने पूर्व हिंदी सेवी की तैयारी में वे जुट जाते हैं। तमगा लेने बाद फिर अंग्रेजी मैम के के लिए काम करते हैं। अगर आप हिंदी सेवी हैं तो आपको मालूम होगा कि पितृपक्ष का समय भी हिंदी श्राद्ध पखवाड़े के ठीक बाद आता है। कितना अच्छा संयोग है। बेचारी हिंदी को 365 दिन कोई नहीं पूछता, लेकिन 15 दिन बेचारी सरकार से लेकर साहित्यकार की जुबान पर होती है। लेकिन पखवारा बीतने के बाद कोई घास नहीं डालता। ठीक वैसे ही जैसे चुनाव जीतने के बाद सरकार और नेता जनता को भूल जाते हैं। हमारे गाजोधर भईया हिंदी के सबसे बड़े सेवक माने जाते हैं। मोहल्ले में उन्हें हिंदीसेवी के रूप में जाना जाता है। हिंदी पखवाड़े भर उन्हें फुर्सत नहीं मिलती है। हर जगह उन्हें सम्मानित किया जाता है। साल, नारियल, प्रशस्ति पत्र एवं अंगवस्त्र से उनका घर भर जाता है। लेकिन हिंदी पखवारा बीतने के बाद उन्हें कोई घास नहीं डालता। गजोधर भईया जैसे हिंदी सेवी की दुर्गति उस समय और बढ़ जाती है जब रुकी हुई वृद्धा पेंशन को चालू करवाने के लिए विभाग के उसी बाबू की जेब गर्म करते हैं जिसने हिंदी दिवस पर उन्हें अंगवस्त्र और श्रीफल भेंट किया था। उस समय उनकी हिंदीसेवा का त्याग अखाड़े में पटखनी खाए पहलवान की तरह होता है। लेकिन अब करें क्या दुनिया के दस्तूर को भला वे कैसे मिटा सकते हैं।

वैसे उन्हें अंग्रेजी बिल्कुल नहीं पसंद है। यह बात अलग है की हिंदी की खाल ओढ़कर वे अंग्रेजी से ईलू-ईलू करते हैं। उन्हें अंग्रेजी नाम से भी बड़ी नफरत है लेकिन अंग्रेजी नहीं बोलते। हाँ अपने कुत्ते का नाम डैनियल, बिल्ली का नाम मर्सी, तोते का नाम टॉम ही रखते हैं। हिंदी नहीं अंग्रेजी गाने पर वे डांस करते हैं। बेटे का नाम इंग्लिश मीडियम स्कूल में लिखवाते हैं। चुनाव में बढ़िया-बढ़िया नारा वे अंग्रेजी में ही गढ़ते हैं। वैसे भी गाजोधर भईया हिंदी दिवस अंग्रेजी में मानते हैं। लोगों को हिंदी दिवस की बधाई अंग्रेजी में लिख कर देते हैं। रात्रि को भोजन नहीं डिनर करते हैं। दोपहर को लंच और सुबह गुड़ मॉर्निंग करते है। सुबह टहलने नहीं मॉर्निंग वॉक पर जाते हैं। हिंदी के लिए जब मोबाइल कि की-पैड दबाते हैं तो अंग्रेजी में ही उन्हें हिंदी के लिए एक नहीं वन दबाना पड़ता है। मोबाइल पर बातचीत शुरू करने के पूर्व वे हैलो करते हैं। उनका पोता नमस्ते नहीं गुड़ मॉर्निंग करता है। रात्रि में गुड़ नाईट और बाय-बाय बोलता है।

जन्मदिवस की शुभकामना का संदेश वह हैप्पी बर्डे टू यू बोल कर देते हैं। फेसबुक पर वह नाइस, रिप और वेलकम बोलते हैं। पोते-पोती को पढ़ाते हैं तो ए फॉर एप्पल और बी फॉर बॉल बोलते हैं। एक -दो-तीन-चार, हिंदी बोलो बार-बार पढ़ाने के बजाय वे वन टू का फोर, फोर टू का वन, माई नेम इज गाजोधर पढ़ाते हैं। फिर तुम्हीं बताओ गजोधर भईया ! खाओगे हिंदी का और गाओगे अंग्रेजी का। सिर्फशाल ओढ़ कर हिंदी को बचाओगे। गजोधर भईया आप जैसे लोग हिंदी की लुटिया नहीं डूबाएंगे तो क्या करेंगे।

हिंदी

हिंदी है पहचान हिन्द की,
जन-गण-मन की भाषा है।
परिभाषित सारा जग इससे,
ये जन-जन की भाषा है।
तुलसी, सूर, कबीर, जायसी,
सबने इसको अपनाया।
मीरा ने अपने कान्हा को,
इकतारे पर है गाया।
संस्कृत से ही जन्मी है यह,
अपनेपन की भाषा है।
राष्ट्र-प्रेम के उद्गारों में,
हिंदी का वर्चस्व रहा।
बंगला, तमिल और उड़िया का,
हिंदी से अपनत्व रहा।
विश्व फलक पर भारत माँ के,
अभिनंदन की भाषा है।
जुड़ी राष्ट्र की अस्मत इससे,
है गंगा-जमुनी धारा।
यही राजभाषा भारत की,
संविधान ने स्वीकारा।
गीतों गजलों में लहराती,
स्वाभिमान की भाषा है।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

आन-बान शान मेरा मान है हिंदी

राष्ट्र का यह प्रखर स्वर है, देश का सम्मान है।
जायसी की साधना है, सूर का अभिमान है।
हर किसी को एकता के, सूत्र में है यह पिरोती,
हिंदी मेरे देश भारत की अनूठी शान है।

हिंद की हिंदी है यह, दिनकर का गौरव ज्ञान है।
मीरा की स्वरदायिनी पावन मधुर मुस्कान है।
कंठ में भूषण, निराला के सदा बसती रही,
यह न हिंदू, यह न मुस्लिम, ये तो हिंदुस्तान है।

कृष्ण की वंशी का सुर है, भारती की आरती।
काव्य की अभिव्यंजना, सद्भावना उच्चारती।
यह हृदय का तम हटा, देती जगत को रोशनी,
नफरतें दिल से मिटाकर प्रेम रस है बांटती।

आन-बान शान मेरा मान है हिंदी।
संस्कृत से उपजे ज्ञान का विज्ञान है हिंदी।
इसको कबीर सूर निराला ने दुलारा,
ये जायसी की प्रीति है रसखान है हिंदी।

कुलदीप 'दीपक'

वैश्विक भाषाओं का नेतृत्व करने के लिए तैयार है हिंदी

डा. श्रीकांत मिश्रा

मानव अनादि काल से अपने विचारों की अभिव्यक्ति का जो विधान करता आ रहा है उसी का विकसित रूप भाषा है। मानव की उन्नति के मूल में इस भाषा का प्रमुख स्थान है। निज भाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है निज भाषा के ज्ञान के अभाव में हृदय की पीड़ा को दूर कर पाना सम्भव नहीं है। इस तथ्य की पुष्टि करते हुए आधुनिक हिंदी के जनक बाबू भारतेंदु हरिश्चंद्र जी लिखते हैं.

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटन न हिय के सूल*

निश्चय ही भाषा किसी भी देश को एकता के सूत्र में बंधने के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। यही कारण था कि महात्मा गांधी ने सन् 1917 ई गुजरातद्ध में हुए सम्मेलन में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाए जाने की प्रबल संस्तुति करते हुए कहा था 'भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि यह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती हैय यह समस्त भारत में आर्थिकए धार्मिक और राजनीतिक सम्पर्क माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा इसे सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है। हिंदी भाषा के विकास का यदि ऐतिहासिक पक्ष देखा जाए तो हम अध्ययन की सुविधा के लिए इसे तीन काल खंडो में विभाजित कर सकते हैं। पहला प्राचीन भारतीय आर्य भाषा कालए दूसरा मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा कल तीसरा आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल। पहला प्राचीन आर्य भाषा 1500 ई पू से 1000 ई पू तक रहाए ये भाषा दो भागों में विभाजित हुई. वैदिक और लौकिक। वेदों और उपनिषद की रचना जिस भाषा में हुई उसे वैदिक संस्कृत कहा गया है, लौकिक संस्कृत में रामायण, महाभारत, नाटक, एवं व्याकरण आदि ग्रंथ लिखे गए। मध्यकालीन आर्य भाषा कल के अंतर्गत पालि भाषा का स्थान निश्चित किया गया है। पालि भाषा 500 ई पू से 1 ई तक रही और इस में बौद्ध ग्रंथों की रचना हुई। आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल के अंतर्गत अपभ्रंश से हिंदी का विकास माना जाता है। हिंदी भाषा का विकास संस्कृत से हुआ यह संस्कृत ईशापूर्व में विकसित हो चुकी थी संस्कृत की विपुल ज्ञान राशि का वरदान हिंदी को संस्कृत से विरासत में मिला है। अस्तु यह भाषा लंबा सफर तय करने के बाद आज वर्तमान स्वरूप में प्रतिष्ठित हुई है। वैदिक संस्कृत से उद्धृत यह भाषा आज अपने नए कलेवर से विश्व का नेतृत्व करने के लिए तैयार है।

हिंदी दिवस को अतीत के आईने से देखें तो *14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने यह निर्णय लिया कि हिन्दी केन्द्र सरकार की आधिकारिक भाषा होगी क्योंकि भारत के अधिकांश क्षेत्रों में सर्वाधिक हिन्दी भाषा बोली जाती थी इसलिए हिन्दी को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया और इसी निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को प्रत्येक क्षेत्र में प्रसारित करने के लिये वर्ष 1953 से पूरे भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज संपूर्ण विश्व में भारत का प्रभुत्व स्थापित हो रहा है संपूर्ण विश्व अपनी आशा भरी नजरों से भारत की ओर ताक रहा है भारत के विविध क्षेत्रों में विश्व को असीम संभावनाएं दिख रही हैं और अगर इन संभावनाओं का संपूर्ण विश्व को लाभ चाहिए तो उसे भारतीयों से संवाद स्थापित करना ही होगा, भारतीयों की संवाद की भाषा हिंदी है विश्व को हिंदी में अपने कार्य व्यवहार को लाना ही होगा, जब तक वह हिंदी को कार्य व्यवहार में नहीं ला सकेगा तब तक किसी को कोई लाभ नहीं होने वाला। शांति की खोज में विभिन्न देश के लोग यहां आकर भारतीय ज्ञान दर्शन को पढ़ने के लिए संस्कृत और हिंदी सीखते देखे गए हैं। व्यापार के क्षेत्र में बड़े.बड़े समृद्ध और विकसित देश भारत से बड़ी उम्मीद लगाए हिंदी में भारतीय जनता से संपर्क स्थापित करने को ललित है। आज हिंदी सभी क्षेत्र में संपन्न भाषा हैए ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में धर्म दर्शन के क्षेत्र में ऐसा कौन सा क्षेत्र है जहां हिंदी अपना लोहा नहीं मनवा रही। अगर हिंदी भाषा की वैश्विक स्थिति की चर्चा की जाए तो यह विश्व के डेढ़ सौ से अधिक देशों में फैले दो करोड़ सत्तर लाख भारतीयों द्वारा बोली जाती है। इस के अतिरिक्त चालीस देशों के छः सौ से अधिक विश्वविद्यालयों और स्कूलों में पढाई जाती है। मेरा तो मानना है कि यदि निष्पक्ष सर्वे कराया जाए तो विश्व की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी भाषा हो सकती है। इसके अतिरिक्त भारत और फिजी की हिंदी राजभाषा है। ब्रिटिश शासन काल में बहुत से श्रमिको को भारत से बाहर अन्य देशों में ले जाया गया, इनमें से अधिकांश देशों में हिंदी भाषा आज एक सशक्त भाषा के रूप में स्थापित है। इन देशों में मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिनाद, गुयाना आदि प्रमुख हैं। विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना मॉरीशस में की गई है। अमेरिका, यूके, ऑस्ट्रेलिया, रूस, चीन जैसे देशों में भी हिंदी भाषी लोगों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा भी हिंदी को शीघ्र ही मिलने की सम्भावना है। जी 20 जैसे सम्मेलनों से यह सिद्ध हो चुका है कि आज हिंदी भाषा अपार संभावनाओं को अपनी गोद में समेटे हुए विश्व का मार्गदर्शन के लिए प्रस्तुत है।

सम्पादकीय

जी20 सम्मेलनः विश्व के नवनिर्माण का प्रमुख शिल्पी बनकर उभरा भारत

जी2० शिखर सम्मेलन में जारी नई दिल्ली घोषणा पत्र पर जिस तरह सभी सदस्य देशों के बीच सहमति के स्वर उभरे उससे एक नए विश्व का निर्माण होता दिखाई दे रहा है और माना जा रहा है कि इस विश्व के नवनिर्माण का प्रमुख शिल्पी भारत बनकर उभरा है। ये आयोजन विश्व के नेताओं के लिए जहां उनकी खास मेहमान नवाजी के लिए जाना जाएगा वहीं सभी सदस्य देशों के बीच विभिन्न मुद्दों पर जो सहमति बनी है उसे एक बड़ी उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है। उम्मीद के मुताबिक जी2० के शिखर सम्मेलन में जिन बातों पर सहमति बनी है, उन्हें विश्व को बेहतर बनाने के प्रयासों का एक अहम हिस्सा कहा जा सकता है। इस ऐतिहासिक आयोजन के दौरान जी2० के मूल मकसद और इस समूह के सदस्य देशों के बीच अनेक मुद्दों पर बनी सहमति एक बड़ी उपलब्धि है। इसमें भारत की भूमिका जिस रूप में सामने आई है, उसे दुनिया भर में इसकी मजबूत उभरती छवि के तौर पर भी देखा जा सकता है।

खासकर 'नई दिल्ली घोषणापत्र' पर सभी सदस्य देशों के बीच बनी सहमति में एक नई विश्व-दृष्टि की झलक मिलती है। खुद प्रधानमंत्री ने इस घोषणापत्र के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इसके साथ ही एक इतिहास रचा गया है हम सर्वसम्मति और मनोभाव के साथ एकजुट होकर बेहतर, अधिक समृद्ध और समन्वित भविष्य के लिए सहयोग के साथ काम करने का संकल्प लेते हैं। निश्चित रूप से इस शिखर सम्मेलन में सद्भावना और औपचारिक प्रक्रियाओं के बीच यह एक महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम है।

दरअसल, नई दिल्ली घोषणापत्र जिन बिंदुओं पर केंद्रित है, उन्हें विश्व भर में समावेशी विकास और लोकतंत्र को मजबूत करने के लिहाज से अहम माना जा रहा है। इसके मुख्य केंद्रीय मुद्दों में मजबूत, दीर्घकालिक, संतुलित और समावेशी विकास के साथ-साथ सतत विकास लक्ष्यों पर आगे बढ़ने में तेजी, दीर्घकालिक भविष्य के लिए हरित विकास समझौता, इक्कीसवीं सदी के लिए बहुपक्षीय संस्थाओं और बहुपक्षवाद को पुनर्जीवित करना आदि शामिल हैं।

सभी नेताओं ने आतंकवाद को अंतरराष्ट्रीय शांति-सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बताया है। ऐसे में आर्थिक सहयोग पर आधारित विकास के लिए काम कर रहे जी2 का नई दिल्ली घोषणापत्र भी इसके घोषित लक्ष्यों के अनुरूप है। इस आयोजन में यह भी उम्मीद थी कि सदस्य देशों के बीच रूस-यूक्रेन युद्ध को लेकर भी एक स्पष्ट राय सामने आएगी। इस मसले पर समूह के बाली में हुए पिछले शिखर सम्मेलन के रुख को ही दोहराया गया कि सभी देशों को किसी भी अन्य देश की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता या राजनीतिक स्वतंत्रता के खिलाफक्षेत्रीय अधिग्रहण की धमकी या बल के उपयोग से बचना चाहिए। साथ ही परमाणु हथियारों का उपयोग या इसकी धमकी अस्वीकार्य है। इसके अलावा, सभी नेताओं ने आतंकवाद को अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए सबसे गंभीर खतरों में से एक बताया। जाहिर है, मौजूदा विश्व में गंभीर चुनौतियों को संबोधित करते हुए सम्मेलन में फिर से व्यापक महत्त्व के मुद्दों पर साथ काम करने को लेकर सहमति बनी है। जी2० सम्मेलन से इतर भारत के लिए यह मौका कूटनीतिक तौर पर एक अतिरिक्त अवसर था, जिसमें अमेरिकी राष्ट्रपति और हमारे प्रधानमंत्री के बीच सीधी बातचीत को एक अहम पक्ष के रूप में दर्ज किया जा सकता है। इसमें दोनों देशों ने विश्व कल्याण, रक्षा साझेदारी को मजबूत करने समेत कई मुद्दों पर साथ काम करने का संकल्प लिया। अमेरिका के अलावा भारत ने कई अन्य देशों के साथ भी द्विपक्षीय वार्ता की, जिसमें आने वाले समय में दुनिया भर में आर्थिक, स्वास्थ्य, सामरिक और अन्य क्षेत्रों में उभर रही चुनौतियों का सामना करने के लिए नए आधुनिक तकनीकी संसाधनों से लेकर कूटनीतिक स्तर पर नई रूपरेखा के लिए सहमति बनी। कहा जा सकता है कि जी2 अपने घोषित उद्देश्यों को अब वैश्विक परिदृश्य में नया स्वरूप दे रहा है और भारत इसमें अब केंद्रीय भूमिका में है। नई दिल्ली में आयोजित जी2० शिखर सम्मेलन में नई दिल्ली घोषणा पत्र में जो मुद्दे उठाए गए है और उन पर जो सहमति बनी है अब देखनी बाली बात है कि विष्व के देष उन मुद्दों पर कितनी गंभीरता से काम करते है।

वैदिक काल से ही आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र था भारत

डा. मधुकर श्याम शुक्ला

भारत आज आर्थिक विकास के उच्च पाय दान पर स्थापित है किंतु बहुत कम लोग जानते है कि वैदिक काल से ही अपने यहाँ बड़े पैमाने पर आर्थिक गतिविधियों का संचालन होता था। आर्यो के मुख्य व्यवसाय के रूप में पशुपालन एवं कृषि का विवरण मिलता है जबकि पूर्व वैदिक आर्यो ने पशुपालन को ही अपना मुख्य व्यवसाय बनाया था। ऋग्वैदिक सभ्यता ग्रामीण सभ्यता थी। इस वेद में 'गव्य एवं गव्यति शब्द चारागाह के लिए प्रयुक्त है। इस काल में गाय का प्रयोग मुद्रा के रूप मे भी होता था। अवि (भेड़), अजा (बकरी) का ऋग्वेद में अनेक बार जिक्र हुआ है। हाथी, बाघ, बतख, गिद्ध से आर्य लोग अपरिचित थे। धनी व्यक्ति को गोपत कहा गया था। राजा को गोपति कहा जाता था युद्ध के लिए गविष्ट, गेसू, गव्य ओर गम्य शब्द प्रचलित थे। समय की माप के लिए गोधुल शब्द का प्रयोग किया जाता था। दूरी का मान के लिए गवयतु।

ऋग्वेद में कृषि का उल्लेख मात्र 24 बार ही हुआ है, जिसमें अनेक स्थानों पर यव एवं धान्य शब्द का उल्लेख मिलता है। 'गो' शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में 174 बार आया है। गाय को पवित्र माना जाता था और उसे अधन्य कहा जाता था। गाय विनिमय का मुख्य साधन थी, इसलिए इसका धार्मिक एवं सामाजिक की अपेक्षा आर्थिक महत्व अधिक था। ऋग्वेद में सम्पति का मुख्य रूप गोधन था। युद्ध का प्रमुख कारण गायों की गवेषणा अर्थात् 'गविष्टि' था। पुरोहितों को गायें और दासियाँ दक्षिणा के रूप में दी जाती थीं। दान के रूप में भूमि न देकर दास-दासियाँ ही दी जाती थी। वैदिककालीन कृषि ऋग्वैदिक काल में राजा भूमि का स्वामी नहीं होता था। वह विशेष रूप से युद्धकालीन स्वामी होता था। ऋग्वेद में दो प्रकार के सिंचाई का उल्लेख है- खनित्रिमा (खोदकर प्राप्त किया गया जल) स्वयंजा (प्राकृतिक जल) उद्योग ऋग्वैदिक काल में वस्त्र धुलने वाले, वस्त्र बनाने वाले (वाय), लकड़ी एवं धातु का काम करने वाले एवं बर्तन बनाने वाले शिल्पों के विकास के बारें मे विवरण मिलता है। चर्मकार एवं कुम्हार का भी उल्लेख

मिलता है। सम्भवतः 'अयस' शब्द का उपयोग ऋग्वेद में करघा के लिए, 'ओत' एवं तन्तु शब्द का प्रयोग ताने-बाने के लिए एवं 'शुध्यव' शब्द का प्रयोग ऊन के लिए किया जाता था। ऋग्वेद में कपास का उल्लेख नहीं मिलता है। ऋग्वेद में हिरण्य एवं सुवर्ण शब्द का प्रयोग सोने के लिए किया गया है। 'निष्क' सोने की मुद्रा थी। तक्षन व तष्ट शब्द का प्रयोग बढ़ई के अर्थ में किया गया है। आर्यो के सामाजिक जीवन में रथों का अधिक महत्व होने के कारण 'तक्षा' सामाजिक प्रतिष्ठा अधिकर बढ़ी हुई थी। 'अनस' साधारण गाड़ी को कहा जाता था। 'नद' (नरकट) का प्रयोग ऋग्वेद काल में स्त्रियाँ चटाई बुनने के लिए करती थीं। 'चर्मग्न' चमड़ा सिझाने वालों का कहा जाता था। ऋग्वैदिक काल में व्यापार में क्रय-विक्रय हेतु विनिमय प्रणाली का शुभारम्भ हो चुका था। इस प्रणाली में वस्तु विनिमय के साथ-साथ गाय, घोड़े एवं स्वर्ण से भी क्रय-विक्रय किया जाता था। विनिमय के माध्यम के रूप में निष्क का उल्लेख हुआ है, किन्तु इसका समीकरण विवादग्रस्त है। संभवतः यह प्रारंभ में हार जैसा कोई स्वर्णाभूषण था, कालान्तर में सिक्के के रूप में प्रयुक्त होने लगा। ऋग्वैदिक काल में व्यापार करने वाले व्यापारियों एवं व्यापार हेतु सदूरवर्ती प्रदेशों में भ्रमण करने वाले व्यक्ति को 'पणि' कहा जाता था। ऋग्वेद में एक स्थान पर देवताओं तथा पणियों के बीच संघर्ष तथा देवताओं द्वारा उनके संहार का वर्णन मिलता है। व्यापार स्थल एवं जल दोनों रास्तों से होता था, आन्तरिक व्यापार बहुधा गाड़ियों, रथों एवं पशुओं द्वारा होता था। आर्यो को समुद्र के विषय में जानकारी थी या नहीं यह बात अभी तक अस्पष्ट है। फिर भी ऋग्वेद में सौ पतवारों वाली नौका से यात्रा करने का विवरण प्राप्त होता है। एक स्थान पर तुग्र के पुत्र भुज्य की समुद्र यात्रा वर्णन है जिसने मार्ग में जलयान को नष्ट हो जाने पर आत्मरक्षा के लिए अश्विनीकुमारों से प्रार्थना की थी। अश्विनी कुमारों ने उनकी रक्षा के लिए 1०० पतवार वाला जहाज भेजा था। इस काल में ऋण देकर व्याज लेने वाले वर्ग को 'बेकनाट' (सूदखोर) कहा जाता था।

राजनीतिक दलों की बढ़ती हैसियत

एक ओर जहां आम आदमी को दो वक्त की रोटी का जुगाड़ करने के लिए जद्दोजहद करनी पड़ रही है। वहीं दूसरी ओर देश की राजनैतिक पार्टियों की हैसियत दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है। देश की आठ राष्ट्रीय राजनीतिक दलों की संपत्ति में पिछले एक साल के दौरान हुई बढ़ोतरी का जो ब्योरा असोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स ने पेश किया है। साल 2०21-22 में राजनीतिक दलों की संपत्ति के ग्राफपर नजर डालें तो साल 2०14 से ही केंद्र की सत्ता में बैठी भाजपा की संपत्ति सबसे ज्यादा बढ़ी है, हालांकि विपक्ष में होने के बावजूद कांग्रेस भी प्रतिशत में बढ़ोतरी के हिसाब से ज्यादा पीछे नहीं है। भाजपा की संपत्ति अगर 2०2०-21 के 4,99० करोड़ रुपये से बढ़कर 2०21-22 में 6,०46 करोड़ रुपये हुई और इस तरह 21.17 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई तो कांग्रेस भी 16 फीसदी की वृद्धि दर्ज करते हुए 691 करोड़ रुपये से 8०5.68 करोड़ रुपये तक पहुंच गई। हालांकि सत्तारूढ़ दल और मुख्य विपक्षी दल की संपत्ति में 5,००० करोड़ रुपये से ऊपर का यह अंतर मौजूदा दौर में देश की राजनीति में अंदर तक घुस चुके क्रोनी कैप्टलिज्म के बारे में बहुत कुछ कहता है। सच है कि चुनाव सिर्फपैसे और सत्ता की ताकत से नहीं जीते जाते, लेकिन चुनावों में पैसा और उससे हासिल संसाधनों की अहम भूमिका से भी इनकार नहीं किया जा सकता। मगर विभिन्न दलों की संपत्ति के इस ब्योरे को लेकर सबसे बड़ी बात यह है कि तमाम पार्टियों ने अपनी कमाई के बारे में खुद से जो तथ्य बताए हैं, वही सामने आया है। और सच यही है कि इन दलों ने पूरी कमाई नहीं बताई है। जाहिर है राजनीतिक दलों की पारदर्शिता सुनिश्चित करने की दिशा में अभी लंबा सफर तय करने की जरूरत है।

प्रतिभा का दमन करती रैगिंग की मनोवृत्ति

डा. शिशिर शुक्ला

हाल ही में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मंडी में रैगिंग की एक घटना प्रकाश में आई है। विगत 14 अगस्त को सीनियर विद्यार्थियों के द्वारा जूनियरों को परिचय के बहाने कक्षा में बुलाया गया एवं उनके साथ अनेक उल्टी सीधी हरकतों को अंजाम दिया गया। यहां तक कि विरोध करने वालों को मुर्गा बनाकर धमकी भी दी गई। हालांकि अच्छी बात यह रही कि पीड़ित विद्यार्थियों के अभिभावकों की शिकायत पर एंटी रैगिंग कमेटी के द्वारा मामले की जांच की गई एवं दस छात्रों को निलंबित कर दिया गया। हतप्रभ कर देने वाली बात तो यह है कि रैगिंग में बहत्तर छात्र संलिप्त थे। सभी पर संलिप्तता के आधार पर जुर्माना लगाया गया है। एक बेहद चिंताजनक सवाल यह उठता है कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जोकि भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में अपनी एक अद्वितीय पहचान रखते हैं, रैगिंग जैसे दुष्कृत्य की चपेट में कैसे आ रहे हैं। रैगिंग को लेकर यह कोई पहली घटना नहीं है। इससे पहले भी अनेक बार रैगिंग एवं उसके भयावह दुष्परिणाम प्रकाश में आ चुके हैं। इंजीनियरिंग से लेकर मेडिकल कॉलेज एवं विश्वविद्यालयों तक में रैगिंग के नाम पर उत्पीड़न की सीमा को लांघने की घटनाएं यदा-कदा ही घटती रहती हैं। अनेक स्थितियों में तो ऐसा भी हुआ है कि रैगिंग का शिकार हुए विद्यार्थियों ने शारीरिक एवं मानसिक उत्पीड़न से परेशान होकर आत्मघाती कदम तक उठा लिए। आईआईटी मंडी की घटना में आरोपी छात्रों के द्वारा यह बयान दिया गया कि वे केवल जान पहचान एवं हास परिहास कर रहे थे।

इंटरमीडिएट की परीक्षा को उत्तीर्ण करने के उपरांत उच्च शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थी अपने मन मस्तिष्क में भविष्य को लेकर विभिन्न उज्ज्वल स्वप्न संजोकर प्रवेश लेते हैं। यहां पर एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि प्रतिभा का किसी क्षेत्र अथवा परिवेश से कोई खास लेना देना नहीं होता। प्रतिभावान विद्यार्थी शहरों में भी होते हैं और गांवों में भी। हां, परिवेश के कारण इतना अंतर अवश्य आ जाता है कि शहर के विद्यार्थी व्यक्तित्व विकास एवं उन्मुक्तता के पैमाने पर गांव के विद्यार्थियों से कहीं आगे होते हैं। बहिर्मुखी एवं अंतर्मुखी स्वभाव के पीछे कहीं न कहीं वह परिवेश ही उत्तरदायी होता है जहां विद्यार्थी रहते एवं शिक्षा दीक्षा ग्रहण करते हैं। अंतर्मुखी स्वभाव के प्रतिभावान विद्यार्थी जब उच्च शिक्षण संस्थानों में कदम रखते हैं तो निस्संदेह उन्हें एक परिवर्तित परिवेश का सामना करना पड़ता है एवं उस समय उनके पास स्वयं को उस परिवेश में ढालने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं होता क्योंकि उनकी शिक्षा, भविष्य एवं कैरियर प्राथमिकता के रूप में उनके सामने खड़ा होता है। वरिष्ठ छात्रों के द्वारा परिचय की आड़ लेकर जूनियर विद्यार्थियों को रैगिंग के पाश में फंसाना उन विद्यार्थियों पर विशेष रूप से भारी पड़ जाता है जोकि नवीन वातावरण में स्वयं को ढालने के साथ-साथ अपने परिवार की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए कठिन मानसिक संघर्ष की स्थिति से गुजर रहे होते हैं। रैगिंग के नाम पर अश्लील हरकतें, शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना, अनावश्यक हास परिहास इत्यादि को अंजाम दिया जाता है। ये सभी घटनाएं संवेदनशील विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का स्तर गिरने में कोई कसर नहीं छोड़ती। दुष्परिणाम यह होता है कि विद्यार्थी पढ़ाई छोड़कर घर वापस आ जाने जैसे कदम उठाने को विवश हो जाते हैं। कुछ विद्यार्थी तो इस हद तक आहत हो जाते हैं कि वह आत्महत्या का रास्ता चुन लेते हैं। कुल मिलाकर नतीजा सिर्फ एक होता है, और वह है प्रतिभा की हत्या अथवा दमन। आंकड़े बताते हैं कि 2०21 में रैगिंग के 511 मामले जबकि 2०2० में 219 मामले दर्ज किए गए। ये सिर्फकागजी आंकड़े हैं। जाहिर सी बात है कि बहुत से मामले ऐसे भी होते होंगे जोकि प्रकाश में ही नहीं आ पाते। पीड़ित विद्यार्थी अपने साथ हुए उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाने का साहस ही नहीं कर पाते और इस तरह मामला स्वतः ही दब जाता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तमाम दिशानिर्देशों के बावजूद भी रैगिंग जैसी कुत्सित घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं। प्रत्येक उच्च शिक्षण संस्थान के परिसर में स्पष्ट रूप से नोटिस बोर्ड पर लिखा है कि रैगिंग एक दंडनीय अपराध है, किंतु आए दिन रैगिंग की घटनाओं का होना कहीं न कहीं यह दर्शाता है कि रैगिंग के संबंध में दिए गए नियमों एवं दिशानिर्देशों का खुलकर मजाक उड़ाया जा रहा है।

निश्चित रूप से यह एक गंभीर चिंता का विषय है इस मुद्दे पर अभिभावकों, शिक्षण संस्थानों, प्रशासन एवं सरकार, प्रत्येक स्तर पर जागरूकता, सतर्कता एवं सख्ती की महती आवश्यकता है। काश एक लोकप्रिय हिंदी फिल्म 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' का वह दृश्य वास्तविकता में परिणत हो पाता जिसमें सीनियर विद्यार्थियों द्वारा जूनियरों की रैगिंग के समय एक जूनियर छात्र के द्वारा पूरा सीन ही पलट कर रख दिया जाता है और देखते ही देखते जूनियर छात्र सीनियर छात्रों की रैगिंग करने लगते हैं। बहरहाल इस रोगतुल्य मनोवृति से छुटकारा पाने के लिए सर्वप्रथम तो अभिभावकों के द्वारा विद्यार्थियों को इस तरह से अभिप्रेरित किया जाना चाहिए कि वह अपना पूर्ण ध्यान अपनी पढ़ाई पर केंद्रित करें। पहली बार एक नए माहौल में जा रहे विद्यार्थियों को अभिभावकों के द्वारा एक मजबूत सहारे के रूप में अपना मार्गदर्शन देते हुए उनके अंदर यह भावना कूट-कूट कर भरनी चाहिए कि वे किसी भी परिस्थिति से तनिक भी न घबराएं एवं अपने साथ होने वाले किसी भी अत्याचार के खिलाफ खुलकर आवाज उठाने की हिम्मत जुटा सकें। अभिभावकों को प्रत्येक स्तर पर विद्यार्थी के साथ खड़े रहना चाहिए। उच्च शिक्षण संस्थानो के द्वारा सत्र के आरंभ में नवप्रवेशित एवं वरिष्ठ विद्यार्थियों के लिए संयुक्त रूप से एक ऐसे कार्यक्रम का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें रैगिंग को कठोरता के साथ दंडनीय बताते हुए विद्यार्थियों में इसके परिणाम को लेकर भय की भावना उत्पन्न करने का प्रयत्न किया जाए। उल्लंघन करने वाले विद्यार्थियों के खिलाफसंस्था से निष्कासन जैसे सख्त कदम उठाए जाने चाहिए। अगले स्तर की बात करें तो शासन के द्वारा ऐसे कड़े नियम बनाए जाने चाहिए जो रैगिंग में संलिप्त विद्यार्थियों के साथ अपराधियों जैसा व्यवहार करें। यह बात सौ फीसदी सच है कि जब तक रैगिंग करने को लेकर विद्यार्थियों में भय की भावना नहीं उत्पन्न होगी एवं रैगिंग का शिकार होने वाले विद्यार्थियों में निर्भीकता नहीं आएगी, तब तक रैगिंग जैसी घटनाएं रुकने वाली नहीं है। यह एक कटुसत्य है कि रैगिंग का सीधा सा अर्थ है प्रतिभा का दमन एवं नाश। जब तक उच्च शिक्षण संस्थानों से रैगिंग पूर्णतया समाप्त नहीं होगी तब तक प्रतिभाओं का दमन यूं ही जारी रहेगा। प्रतिभा के नाश से कहीं बेहतर है कि रैगिंग की प्रथा का ही नाश कर दिया जाए।

लेकिन-किंतु-परंतु

व्यंग्य

राजेन्द्र वर्मा
लखनऊ

कभी-कभी सोचता हूँ कि यदि 'लेकिन-किन्तु-परन्तु' जैसे शब्द न होते, तो बेचारे बुद्धिजीवियों के लिए कितनी मुश्किल हो जाती। एक ठेठ देहाती या कम पढ़ा-लिखा आदमी अपनी बात सीधे-सादे और कभी-कभार 'तू-तड़ाक' से भी कह देता है। वह किसी लेकिन-किन्तु-परन्तु के चक्कर में नहीं पड़ता, लेकिन (क्षमा करें, मुझे भी इस शब्द का प्रयोग करना पड़ रहा है) जब कोई बुद्धिजीवी, अधिकारी या नेता कुछ कहता है, तो सबसे पहले वह दो वाक्यों को आलू की टिकियों की तरह विरोधाभास के दोने में रखता है। फिर उसमें वह निहितार्थ और फलितार्थ की खटमिट्ठी चटनी और लेकिन-किन्तु-परन्तु का बुकनू डालता है। फिर चतुराई की हरी धनिया से सजाकर पेश करता हैकृ लीजिए, जनाब खास आपके लिए !

एक बार भ्रष्टाचार के मामले में मन्त्री जी को जेल की हवा खानी पड़ी। वह एक 'थ्री-स्टार' जेल थी, जो सरकारी गेस्ट हाउस में विशेष रूप से तैयार की गयी थी। ऐसी जेल नहीं कि जहाँ कैदी को जिन्दा रहने के लिए दाल का पानी और चार चपातियाँ मिलती हैं।

नेता जी ने जेल से बयान दिया कि उन्होंने कोई भ्रष्टाचार नहीं किया है, बल्कि वे स्वयं भ्रष्टाचार का शिकार हो गए हैं। कारण, आजकल मुख्यमन्त्री और उनमें छत्तीस का आँकड़ा है। उनका (मन्त्री जी का) संकल्प है कि वे अपने विभाग से भ्रष्टाचार दूर करके ही दम लेंगे। अखबारों में उनके बयान छपने के बाद शीर्ष अधिकारियों की आपातकालीन बैठक हुई, जिसमें यह प्रस्ताव पारित किया गया कि माननीय मुख्य मन्त्री के भ्रष्टाचार दूर करने के संकल्प को वे कार्यरूप में परिणित करेंगे।

बन्दी मन्त्री से पत्रकारों ने पूछा, ''माननीय ! आप भी भ्रष्टाचार दूर करने की बात कर रहे हैं और आपके विभाग के अधिकारी भी। कृपया जनता को यह बतलाइए कि भ्रष्टाचार आखिर है कहाँ? ''मन्त्री जी ने पत्रकारों को दिव्य ज्ञान प्रदान किया, ''आपका प्रश्न महत्वपूर्ण है। इसके मूल में सत्य प्रछन्न है। हालाँकि वे सत्य से सुपरिचित हैं, लेकिन अभी वे सत्य का उदघाटन नहीं करेंगे। समय आने पर करेंगे। ''समय आने पर, जब भ्रष्टाचारियों में आपसी टकराव समाप्त हो जाएगा, तब सत्य स्वमेव उद्घाटित हो जाएगा। फिर आपके बयान की क्या जरूरत रह जाएगी? ''एक पत्रकार के इस कथन पर मन्त्री जी के मुख से जबान उनके पेट में ऐसे गिर गयी, जैसे अर्दब में आयी किसी छिपकली की पूँछ टूटकर फर्श पर गिरती है !

'लेकिन-किन्तु-परन्तु' ने राजनीति ही नहीं अखबारों में भी अपनी दुकान सजा रखी है। एक बार मैंने एक दैनिक अखबार के सम्पादक से पूछा, ''श्रीमान ! अपने अखबार में आप प्रतिदिन खेलकूद या व्यापार जगत को पूरा एक पृष्ट देते हैं,जबकि साहित्य को सप्ताह में एक पृष्ठ। क्या साहित्य, खेलकूद या व्यापार की भाँति प्रतिदिन काम आने वाली चीज नहीं है?'' उन्होंने तपाक से उत्तर दिया, ''आपका सवाल दुरुस्त है, लेकिन ...'', वाक्य पूरा होता कि टेलीफोन की घंटी बज उठी। वे उसकी सेवा में व्यस्त हो गए। फिर जैसे ही मेरी तरह मुखातिब हुए, उनके चपरासी ने बाअदब बतलाया कि अखबार के मालिक आए हैं और उन्होंने सम्पादक महोदय को फौरन तलब किया है। सम्पादकजी ने मेरी तरफ देखा। उनकी आँखों में विवशता का पानी भरा था, जिसमें मेरे प्रश्न जैसे

सैकड़ों प्रश्न तैर रहे थे। मुझे सम्पादकीय उत्तर मिल गया था।

एक बार मैं ट्रेन से यात्रा कर रहा था। यात्रा कार्यालय के कार्य को लेकर थी, इसलिए मैं फर्स्ट क्लास के डिब्बे में था। कार्यालय की ओर से मुझे प्रथम श्रेणी का किराया मिलता है, यात्रा भले ही मैं द्वितीय श्रेणी में करूँ। कुछ लोग सेकंड क्लास में यात्रा करते हैं, लेकिन कागज पर फर्स्ट क्लास में, मगर मैं ऐसा नहीं कर पाताकृ कभी-कभी तो हमें सरकारी खर्चे पर आभिजात्यता झाड़ने का अवसर मिलता है, और हम उसे भी गँवा दें ! मेरे सामने एक साम्यवादी चिन्तक-विचारक-नेता जी बैठे हुए थे। थोड़ी देर बाद बातचीत शुरू हुई। मैंने उनसे कहा, ''महाशय ! आप तो समता के पुजारी हैं और अनेकानेक असमांताओं के विरोध में सैकड़ों आन्दोलन कर 'गिनीज बुक ऑफवर्ल्ड रिकॉर्ड' बना चुके हैं। मुझे आश्चर्य है कि अब तक आपका ध्यान ट्रेन में यात्रियों के वर्गीकरण की ओर क्यों नहीं गया? जब सभी यात्री सामान हैं, तो फिर एयर-कंडिशंड, फर्स्ट क्लास, स्लीपर क्लास और साधारण डिब्बे जसे बँटवारे का क्या औचित्य है? क्या इससे साम्यवाद के सिद्धान्तों का हनन नहीं होता?

''बन्धु ! आपका प्रश्न सामयिक महत्त्व का है, लेकिन क्या है कि प्रतिभा का सम्मान करना हम भारतीयों की विशिष्ट परम्परा रही है। अब, अगर सभी लोगों को एक सामान समझा जाएगा, तो फिर.... वह कौन-सी कहावत है?.... हाँ, सब धान बाईस पसेरी !.... आप समझ गए न ! देखिए, कभी-कभी असमानता के द्वारा भी समानता के सिद्धान्तों का पालन किया जाता है।'' मुझको आश्वस्त करने का अभिनय करते हुए वे बाये हाथ से अपनी फ्रेंच-कट दाढ़ी दुलराने लगे। अगले स्टेशन पर विचारक नेता हाथ हिलाते उतर गए। कामरेडों ने उनका सामान ढोया। थोड़ी-ही देर बाद, एक अधेड़ उम्र के मुंसिफ साहेब डिब्बे में पधारे। उनके साथ उनका अर्दली भी था। उनसे बातचीत अपेक्षाकृत देर से शुरू हो पायी। मुन्सिफमहोदय की सख्त हिदायत थी कि कोई भी मक्खी उनकी नाक पर इतनी जल्दी बैठने की कोशिश न करे, जितनी कि मक्खियाँ अमूनन किया करती हैं !... वे सारा कार्य ठोक-बजाकर, आराम से करने के आदी थे। ठीक ही थाकृ जल्दबाजी में कहीं न्याय होता है !

न्याय-अन्याय पर बात होनी थी, सो हुई। मैंने मौका पाकर सवाल दागा, ''माननीय ! कानूनी कहावत है, 'जस्टिस डिलेड, जस्टिस डिनाइड !' (न्याय में देरी का अर्थ हैकृ न्याय न मिलना।) और जैसा कि आजकल अखबारों में पढने को मिलता है कि न्यायिक प्रक्रिया पूरी होते-होते इतना समय लेती है कि दादा मुकदमा दायर करता है, तो पोता कहीं उसका फैसला सुन पाता है। क्या यह स्थिति प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत के विपरीत नहीं?''

बड़ी मुश्किल से सहमत होते हुए उन्होंने कहा, ''आपका कथन सत्य है, लेकिन....आ-आँक्छीं ! उन्हें जबरदस्त छींक आ गयी थी। किसी कठिन प्रश्न पर शायद उन्हें छींक आती होगी, यह सोच मैंने सिर झुकाकर उनकी छींक का स्वागत किया और जब उनकी ओर मुखातिब हुआ, तो पता चला कि वे टॉयलेट की ओर भाग चुके थे...

मैंने उनके अर्दली की ओर देखा, जो फर्श पर अखबार बिछाये बैठा था। रिटायरमेंट के करीब पहुँचता हुआ वह मेरी ओर बड़ी दुलार से देख रहा था। जब नजरें मिलीं, तो वह बोला, ''साहेब ! आप लोगन चाहै जौनु बहाना ढूढ़ि ल्यो, मुला साँचु तौ यहै है कि अब कचेहरिन मा न्याय-व्याय नाहीं मिलत है। जौनु मनई कचेहरी आवा, समझौ वहि के करम फूटि गे ! यहि ते तौ यहै अच्छा कि कौनो माफिया ते आपन मामिला निपटे ल्यो !...''इससे पहले कि मुन्सिफ साहेब का अर्दली कुछ और उत्तर-आधुनिक न्यायिक सिद्धान्त निरूपित करता, उसके साहब अपनी सीट सँभाल चुके थे।

कामयाबी के साथ जरूरी है स्वाभिमान

रानी प्रियंका वल्लरी
हरियाणा

हर व्यक्ति के स्वभाव से स्वाभिमान और अभिमान जुड़ा होता है। इन दोनों को विभाजित करने वाली बहुत ही पतली रेखा है। अक्सर यह रेखा अनदेखी रह जाती है और हम इनके अंतर को नजरअंदाज कर जाते हैं। दो शब्दों, स्व और अभिमान, के जोड़ से बना है स्वाभिमान। इसका शाब्दिक अर्थ होता हैं स्वयं पर अभिमान, कहा जाए तो स्वाभिमान से जीने का मतलब आत्मसम्मान के साथ जीना हुआ। स्वाभिमान या आत्मसम्मान की जब भी चर्चा होगी तो सबसे पहले महिलाओं की याद आएगी। हमारे पितृ सत्तात्मक समाज में आधी आबादी ही वो हिस्सा है जिसके स्वाभिमान को सबसे पहले टेढ़ी नजरों से देखा जाता है। अक्सर स्वाभिमानी औरतों को समाज घमंडी करार देता है। जबकि हकीकत ऐसी नहीं। बात तो ये है कि वह बातों में मक्खन लगाकर परोसना नहीं जानती। वह तर्क पर बात करती हैं। रूठने मनाने के झमेले में नहीं पड़ती। वह सीधी सपाट बातें करती हैं.वह प्यार पाने के लिये किसी पूंजीपति पुरुष का शिकार नहीं करती. प्यार का स्वांग नहीं रचती। वह रिश्ते को तराजू पर नहीं तौलती। वह लांछन लगाने से पहले हर गतिविधि पर अवलोकन करती हैं। वह नहीं जानती किसी को तर्जनी के इशारों पर

नचाना और नाचना। वह जिओ और जीने दो के तर्क पर जीना जानती हैं अपने स्वाभिमान को जिंदा रखने के लिये लाखों का सौदा हार जाती हैं।

वह स्वांग में फंसना या फंसाना अपराध के श्रेणी में ही जोड़ती हैं। वह कठपुतलियों में भी प्राण फूँकने का मंत्र जानती है। वह कभी नहीं चाहती मेरे हाथ नीचे हो। वह सदा अपने तलहथी को भू से जोड़ कर रखती हैं। वह इशारों पर थिरकना नहीं जानती। वह तर्क से हर प्रश्न का उत्तर देना जानती हैं। वह अभिमान में नहीं स्वाभिमान में जीती हैं। किसी के एहसान के तले नहीं बिछाती अपनी चार पाया। वह वसूल जिद् पर जीती जिंदगी, नीरे स्वार्थी होने में बड़ी हिचक होती हैं उसे। वह समस्याओं पर रोना नहीं जानती। वह समाधान ढूँढ़ती हैं. वह हिम्मती होती हैं वह न्यायधीश सा फैसला सुनाती किसी का पक्ष विपक्ष उसे भावुक नहीं कर पाता। हर काम में सौ प्रतिशत देना जानती हैं अपने मेहनत पर पूरा विश्वास रखती है। अपने मंजिल पाने के लिये अपने स्वाभिमान को नहीं लगाती बंधक। अगर इसे सकारात्मक नजरिया से देखा जाए तो इसका अर्थ घमंड नहीं होता। यहां हमारी कामयाबी में स्वाभिमान की अहम भूमिका होती हैं। स्वाभिमान को ताक पर मिली कामयाबी वास्तविक कामयाबी नहीं होती।

भरोसा है एक धोखा

मत बैठ किसी के भरोसे कि समय
से ज्यादा लोग धोखे दे जाते हैं॥
चल उठ आगे बढ़ आदत डाल ले
अकेले चलने की कि साथ चलने वाले
भी बीच सफर में साथ छोड़ जाते हैं॥
मत बैठ किसी के भरोसे किस समय
से ज्यादा लोग धोखे दे जाते हैं॥
करोगे कब तक किस पर विश्वास
सीधे मुंह पर तमाचा लगता है
जब भरोसे वाले पल भर में पलट जाते हैं॥।
मत बैठ किसी के भरोसे कि समय
से ज्यादा लोग धोखे दे जाते हैं॥
अपनों की लगी हो भले ही कितनी
भीड़ पर जरूरत पर काम कोई नहीं आते हैं
यही आज की सच्चाई है मतलब की अच्छाई है॥

रीतू चौरसिया, दिल्ली

अटल सफलता सूत्र

प्रात: चार बजे उठ जाओ,
नित्य नयी ऊर्जा को पाओ।
मां वाणी की करो वन्दना,
फिर पुस्तक में ध्यान लगाओ।
मां वाणी देंगी वरदान,
हो जाएगा सब कुछ ध्यान।
नित्य नियम जो अपनाता,
निश्चित ही सफलता है पाता।
विद्यार्थियों सुनो सब कान खोल,
ये नियम आज अपनाना है।
सफलता का यह अटल सूत्र,
हर बच्चे तक पहुंचाना है।
जो इस नियम को अपनाएगा,
वह महान बन जायेगा।
मात-पिता और गुरुओं का,
सम्मान नहीं भूलेंगे हम ।
अपने निज कर्तव्यों का,
अभिमान नहीं भूलेंगे हम।
प्रतिदिन पढ़ने आयेंगे,
नये ज्ञान को पाएंगे।
अब तक जितना पढ़ा है हमने,
रोज सुबह दोहराएंगे।
जो इस नियम को अपनाएगा,
निश्चित ही सफलता पाएगा।
मात-पिता और गुरुओं का ,
जग में सम्मान बढ़ाएगा।

पुरुषोत्तम अवस्थी

हिंदी का जयगान

जब तक तन में जान रहे ये।
बस जीवित अरमान रहे ये।
साँसों के हर तार-तार से,
मैं इसका गुणगान करूँगा।
हिंदी का जयगान करूँगा।
जन-गण-मन की भाषा हिंदी।
भावों की परिभाषा हिंदी।
विश्वगुरू की अमृतवाणी,
जन-जन की अभिलाषा हिंदी।
जब तक शेष एक भी धड़कन,
हिंदी पर अभिमान करूँगा।
हिंदी का जयगान करूँगा।
हिंदी अपनी शान देश की।
हिंदी है पहचान देश की।
हर भाषा से रिश्तेदारी,
हिंदी मीठी तान देश की।
मस्तक की हर एक कल्पना,
में हिंदी का ध्यान करूँगा।
हिंदी का जयगान करूँगा।
जनता की परिचायक हिंदी।
जन-पीड़ा की गायक हिंदी।
यह अखंडता की नव आशा,
लोकराष्ट्र की नायक हिंदी।
जब तक कलम हाथ में मेरे,
हिंदी का रसपान करूँगा।
हिंदी का जयगान करूँगा।

अभिषेक ठाकुर 'अधीर'

मैं तितली नहीं हो सकता

जरा इस नासमझ तितली को देखो
यह तमाम फुलवारियों को छोड़कर
मेरी खिड़की के काँच पर आ बैठी है
शायद यह फूलों से लड़कर आयी है
शायद यह हवाओं के साथ
आँखमिचौनी खेल रही है
शायद धूप इसकी चहेती नहीं रही
शायद यह पुराने पड़ चुके आनन्दों से
थक चुकी है
क्या इसे मेरी तरह
खुशबू की वजह से छींक आने लगी है
देखो कैसे काँप रहे हैं इसके पंख
देखो इसके अन्दर काँप रही है
गुलाब की कोई टहनी
मैं चाहकर भी तितली नहीं हो सकता
मेरे अन्दर कोई बगीचा नहीं है।

सत्येन्द्र कुमार रघुवंशी

हिंदी की दयनीय दशा पर
आओ मिलकर विचार करे
भूल रहे है जो निज भाषा
उनके बीच प्रचार करे।
अंग्रेजी के साम्राज्य का
मिल जुल कर हम अंत करे
और अपनी मातृभाषा का
हम विस्तार अनन्त करे
जिसके पास न अपनी भाषा
वह समाज गूंगा होता
सब सम्मान गंवाता अपना
सब संचित निधियां खोता
इसलिए मिल जुल कर के
एक प्रयास हम सब करे
अपनी भाषा के गौरव को
फिर से हम जीवन्त करे

पुष्कर दीक्षित

गजल

नारियाँ खुद ठगी ठगी सी है।
दर्द में खामोशियां दबी सी है॥
कुछ न बोले जुबां कभी देखो,
दिल में क्यों रोज खलबली सी है।
खूब सजती रही नई चाहत,
रूह पर धूल कुछ जमीं सी है।
रो दिए है जफा में हम उनके,
इश्क में अब भी कुछ नमी सी है।
लाश तो खाक हो गई लेकिन,
लकड़ियां कब तलक बुझी सी हैं।
मुस्कुराते रहे सभी देखों
प्यार का कुछ नशा कमी सी है।
चाह उनकी कभी खिली कलियां
दर्द भी अब भली भली सी है।

मिठु डे
वर्धमान पं. बंगाल

हल्की काली घटा सी
साँवली रंगत है उसकी
पर दिलकश नशीली आँखों ने
उसे हूर कर दिया
उसकी खनकती चूड़ियो का
अब तक इतना असर है
गमगीन मेरे चेहरे को
मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया
चर्चे उसके नाम के
शहर में हो रहे हैं
उस पे लिखी गजल ने
हमे मशहूर कर दिया

मलय चक्रवर्ती

ऊषा शुक्ला, शाहजहांपुर

हम अपने बच्चों को कैसे संस्कार दें!

हम सभी जानते हैं कि हम जो भी कर्म करते हैं ,जैसा भी कर्म करते हैं ,उसका फल हमें इसी धरती पर भुगतना पड़ता है। फिर भी क्यों नहीं डरता मनुष्य। इसके पीछे का कारण आधुनिक विज्ञान तो कभी भी नहीं है । आज का मनुष्य जीना तो सौ साल चाहता है पर बुड्ढा नहीं होना चाहता। आखिर क्यों। मनुष्य जीवन में सिर्फआराम ही क्यों उठाना चाहता है। क्यों कष्ट से भागता है। जीवन के दो पहलू हैं एक दुख एक सुख। सुख मिलने पर मनुष्य बहुत उत्साहित हो जाता है और हमेशा सुखी रहना चाहता है लेकिन जीवन के दूसरे पहलू में अगर थोड़ा सा दुख होता है तो भगवान से शिकायतें शुरू हो जाती है लोगों को गालियां देना शुरू कर देते हैं। जिस पर दुख आता है उसके लिए लोग बोलते हैं इसलिए पाप किए थे इसीलिए इसको दुख मिला है।

असलियत तो यह है कि मानव जीवन मात्र और केवल मात्र भगवान से सुख की अपेक्षा करता है ऐसा क्यों नहीं कहता कि भगवान 'इतनी हिम्मत दीजिए जिससे मैं जीवन में आए हुए हर दुख को भी खुशी-खुशी झेल जाऊं'। इसके विपरीत मनुष्य दुखी होने पर भगवान को याद करता है और सुख मांगता है। सुख पाने की लालच में मानव जीवन ना जाने कितने लोगों को दुख पहुंचाता है। अगर आप स्कूल में शिक्षक है तो आप बच्चों को सिर्फ इसलिए बेईमानी का पाठ पढ़ाते हैं कि वह सुखी रहे आज के युग में पढ़ाई केवल मात्र होमवर्क देना रह गई है। बच्चा लिखता रहे लिखता रहे और बस लिखता रहे। अपने बच्चों को माता पिता के सुखी देख नहीं पाते और दिखावा तो करते हैं जो कुछ कर रहे हैं अपने बच्चों के सुख के ले कर रहे हैं पर जाने अनजाने बच्चों को दुखी देते हैं उनका बचपना छीन लेते हैं।

बच्चों के नंबर के पीछे भागना। बच्चों को हर समय किताब खोलकर पढ़ने के लिए बोलना। बहुत कम माता-पिता मैंने ऐसे देखे हैं जो अपने बच्चों को बिठाकर किताब से पहले संस्कार सिखाते हैं। समाज से लड़ना है तो क्या संस्कार जरूरी नहीं है। दुनिया को दिखाने के लिए बच्चों को कुछ बनाना है या पैरों पर खड़ा करना है पर किताबी विद्या कब किसी बच्चे को बड़ा होकर के संस्कारी बना देती है। आप एक अच्छी नौकरी तो कर लेते हैं हो सकता है सरकारी अच्छी नौकरी मिल जाए। बहुत ऊंचा पद मिल जाए ,पर संस्कार। क्या यह मिलते हैं? अपने सामने बड़े बुजुर्गों को आते देखते हुए भी बच्चे उन्हें सम्मान नहीं देते हैं बल्कि उनके बुढ़ापे का मजाक उड़ाते हैं सबसे पहले हमको संस्कार ही अपने बच्चों को देना चाहिए। अगर आज आपके बच्चे दूसरे लोगों को सम्मान देंगे तो कल आपको भी सम्मान देंगे आप का भी ख्याल रखेंगे। शिकायत तो माता-पिता करते हैं कि बच्चे हमारा ध्यान नहीं रखते अरे कैसे रखेंगे। आपने ही तो अपने बच्चों को स्वार्थी बनाया है आपने ही तो अपने बच्चों को दूसरों का अपमान करना सिखाया है। जब पेड़ बबूल का बोल रहे हो तो इसमें आम कैसे निकलेंगे आपकी सेवा कैसे होगी। आपके बच्चे आपका ध्यान कैसे रखेंगे।

बदलाव की जरूरत है परिवर्तन की जरूरत है। हमें अपने बच्चों को सबसे पहले अच्छे संस्कार देने चाहिए। बच्चों का ना ही कोई दुश्मन होता है ना दोस्त ऐसी शिक्षा तो बच्चों को जरूर देनी चाहिए।

अगर आपकी किसी से लड़ाई हो जाती है या आप किसी से नफरत करते हैं तो बच्चों को उसमें शामिल मत कीजिए । यह है पहला संस्कार। स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए भगवान उनकी किताब और कॉपी है। बच्चों को सिखाना पड़ेगा कि भगवान के सामने अगरबत्ती लगाने की बजाय अगर बच्चे अपने पेंसिल और पेन से कॉपी पर अच्छा अच्छा लिखते हैं तो यही उनकी पूजा है। अपने से बड़ों को सम्मान देने में बच्चों का भला ही होगा यह है दूसरा संस्कार। जो माता-पिता अपने बच्चों को स्वार्थी होना सिखाते हैं या चालाक होना सिखाते हैं उनके बच्चे सबसे पहले स्वार्थ और चालाकी अपने पिताजी और माताजी के साथ ही दिखाते हैं। इसलिए आज ही हो जाइए सावधान ।आज का आराम मत देखिए। बच्चों को अच्छा नागरिक बनाइए। अपने बच्चों को अच्छा इंसान बनाइये। पैसे तो कोई भी कमा सकता है पर संस्कार हर कोई नहीं कमा सकता।

कु. आरज़ू सिंह

हिंदी अपनी मातृ भाषा।
जिससे जुड़ी हुई है आशा।
हिन्दी है ईमान हमारा।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा।
जन्म लिया तब हिन्दी बोली।
हिंदी लगती सबसे भोली।
हिन्दी भाषा लगती प्यारी।
हिन्दी बोले दुनिया सारी।
अंग्रेजी से लगती प्यारी।
हिन्दी देखो शान हमारी।
लगती नहीं हमें जो प्यारी।
खाये इंग्लिश जान हमारी।
अंग्रेजी जब समझ न आती।
हिन्दी ही तब सबको भाती।
हिन्दी ही हमको आती है।
हिन्दी देखो मुस्काती है।

ज्वार उठेगा देशप्रेम का,
आशा हिन्दी ही होगी।
हृद आँगन का मर्म समझ,
परिभाषा हिन्दी ही होगी।
क्षेत्रवाद की सीमाओं को,
तोड़ जो सिर चढ़ बोलेगी,
जो मुखरित होगी अधरों से,
वह भाषा हिन्दी ही होगी।।

डॉ इन्दु अजनबी

साहित्य के छात्रों का अभिमान है: हिंदी

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा ही नहीं हमारा गौरव, हमारा सम्मान है। हिंदी ने आजादी की लड़ाई लड़ी है। हिंदी ने उत्तर दक्षिण को जोड़ा है। यह कारण है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा की मान बढ़ने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं - 'हिंदी दिवस' इसी दिशा में एक सार्थक प्रयास है। हम उस दिन की याद में हिंदी दिवस मनाते हैं जिस दिन हिंदी को हमारे देश की आधिकारिक भाषा के रूप में नामित किया गया था। यह युवाओं को अपनी जड़ों से पुन: परिचित कराने का एक तरीका है।

अगर हम अपनी जड़ों से जुड़े रहेंगे तो हम मजबूत होंगे, चाहे हम कहीं भी जाएं या कुछ भी करें। हर साल, यह दिन हमें हमारे सच्चे स्वरूप की याद दिलाने और देश को एक साथ लाने का काम करता है। हम जहां भी जाएं, हमारी भाषा, संस्कृति और मान्यताएं निरंतर अनुस्मारक के रूप में हमारे साथ होनी चाहिए। वर्तमान में अंग्रेजी को प्राथमिकता दी जा रही है, जो समझ में आता है कि यह व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है और भारत की आधिकारिक भाषाओं में से एक है। यह दिन इस बात की एक छोटी सी याद दिलाता है कि हमारी राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी कितनी महत्वपूर्ण है। भारत में हिंदी दिवस हर साल 14 सितंबर को मनाया जाता है। ये सिर्फएक दिन नहीं है बल्कि ये अपनी मातृभाषा को सम्मान दिलाने का भी दिन है। वो भाषा जिसे हिन्दुस्तान का लगभग तीन-चौथाई भाग समझता है। हिंदी भाषा की भारत को आजादी दिलाने में भी अहम भूमिका रही है। हिंदी दिवस का दिन उस हिंदी भाषा को समर्पित है जिसने हम सभी को तो आपस में जोड़ दिया लेकिन खुद कहीं-न- कहीं टूटती हुई नजर आ रही है और अब हमें इस भाषा के लिए एक विशेष दिन मनाना पड़ रहा है।

वर्तमान समय में अगर हम झांके, तो हम देखेंगे कि हिंदी दिवस का दिन अब एक औपचारिकता मात्र बन चुका है। अब तो ऐसा लगता है जैसे मानो लोग मर चुकी हिंदी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। हिंदी दिवस के अलावा आपने कभी अंग्रेजी दिवस, चीनी दिवस, फ्रेंच दिवस या किसी दूसरी भाषा के दिवस के बारे में सुना है। हिंदी दिवस मनाने का मतलब है गुम होती हिंदी, मर चुकी हिंदी और टूटती - बिखरती हुई हिंदी को बचाने का एक प्रयास, जिसे हम भारतीय हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाकर करते हैं। ये तो हम सभी जानते हैं कि हिंदी हमारी मातृभाषा है। जब किसी बच्चे का जन्म होता है, तो उसे भाषा का पहला ज्ञान उसके आसपास सुनाई देनी वाली आवाजों से प्राप्त होता है। सबसे पहले वह अपने घर में ही चीजों को सुनता और देखता है। हमारे देश में ज्यादातर घरों में आम बोलचाल के लिए हिंदी भाषा का ही प्रयोग किया जाता है और भारतीय बच्चे हिंदी भाषा को बुहत ही आसानी से समझ लेते हैं।

जब कोई छोटा बच्चा घर में होता है, तो उससे सभी हिंदी में बात करते हैं, लेकिन जैसे ही वो बच्चा चार या पांच साल का हो जाता है, तो उसे किसी प्ले स्कूल या नर्सरी स्कूल में भेज दिया जाता है और उसे यहीं से हिंदी भाषा से ज्यादा अंग्रेजी भाषा को सीखने पर जोर दिया जाने लगता है। उस बच्चे के कोमल और कच्चे दिमाग पर अंग्रेजी भाषा में बोलने, लिखने और पढ़ने का दबाव डाला जाता है। जब वह बच्चा पहली या दूसरी क्लास में आता है, तो कई स्कूलों में टीचर उसको समझाने के लिए भी अंग्रेजी भाषा का ही इस्तेमाल करते हैं। कई बड़े अंग्रेजी स्कूलों में तो अंग्रेजी भाषा को ऐसे पढ़ाया जाता है जैसे ये ही हमारी राष्ट्रभाषा हो । हर माता- पिता का भी यही सपना होता है कि उनका बच्चा किसी बड़े और अच्छे अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाई करे।

ऐसे भी कई बच्चे होते हैं जिन्हें अंग्रेजी भाषा सीखने में मुश्किल आती है और वह इसमें कमजोर रह जाते हैं। और तब हम उनके साथ ऐसा बर्ताव करते हैं जैसे मानो उन बच्चों से बहुत बड़ी गलती हो गई हो या उन्होंने अंग्रेजी न सीखकर कोई बहुत बड़ा जुर्म कर दिया हो । आज हिंदी भाषा की स्थिति इतनी खराब है कि लोग हिंदी बोलने से कतराते हैं। हिंदी में बात करने में उन्हें शर्म महसूस होती है और यदि उनके आसपास किसी दूसरे व्यक्ति गलती से हिंदी में बात कर ली, तो वह उसे अनपढ़, गंवार समझने लगते हैं। आज हमारे देश और समाज के लोगों में एक ऐसी सोच पैदा हो गई है कि आपके पास चाहे दुनियाभर का कितना भी ज्ञान हो, आप कितनी ही अच्छी हिंदी क्यों न बोलते हों लेकिन अगर आपको अंग्रेजी सही से नहीं आती, तो फिर आप बेकार हैं और आपको कुछ नहीं आता है। हमें याद रखना चाहिए कि हम पहले भारतीय हैं और हमें अपनी भाषा का सम्मान करना चाहिए, इसके बावजूद कि अंग्रेजी मूल एक सार्वभौमिक भाषा है जिसका महत्व कम नहीं किया जा सकता है। लेकिन हिंदी को भी आधिकारिक भाषा के रूप में नामित किया गया है, तो हिंदी को भी उतनी ही प्राथमिकता और भरपूर सम्मान देना चाहिए!!

करूण चतुर्वेदी

यश स्टार्क

विश्व में पहचान बनाती राजभाषा हिंदी

आजादी से पूर्व अंग्रेजी का महत्व ज्यादा था। अंग्रेजी उन दिनों शिक्षा, नौकरी, प्रशासन के लिए जरूरी थी। भला अंग्रेजो को भारत में अपने जैसे अंग्रेज भी बनाने थे, ताकि उनकी भाषा संस्कृति का प्रचार प्रसार हो सके। लोगो ने उन दिनो अंग्रेजी धड़ुले से सीखी। अंग्रेजी का काम आसान हो गया था, उन्होंने अंग्रेजी प्रेमियों की एक नई जमात तैयार कर दी थी, जो फ्री में ही उनकी भाषा का प्रसार कर रहे थे। दूसरी बात यह भी है अंग्रेजी शिक्षा ने भी अंग्रेजी सीखने पर मजबूर कर दिया था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारियों, स्वाधीनता संग्राम के नेताओ के समक्ष एक विशेष समस्या खड़ी हो गई, की भईया संपर्क भाषा किसे बनाया जाए। अंग्रेजी का प्रयोग सिर्फ अंग्रेजी पढ़े लिखे लोग ही कर सकते थे। जनसामान्य के लिए अंग्रेजी भाषा प्रयोग करना, समझना कठिन था। और फिर अंग्रेजी भाषा में वो राष्ट्र गौरव भी नही था। लेकिन एक भाषा थी जो स्वाधीनता सेनानीयो के लिए बाहें फैलाए इंतजार कर रही थी। उसने न सिर्फ राष्ट्र भाषा का गौरव दिया बल्कि जनसामान्य से संपर्क साधा। वो भाषा थी हिंदी। जी हां वही हिंदी भाषा जिसे आज भी हम अग्रेजियत के बोझ तले दबा रहे है। तिलक जी, मालवीय जी, विवेकानंद, गांधीजी, बोस जी आदि ने हिंदी के माध्यम से अपने विचार आम जन तक पहुंचाए और हमें आजादी मिली।

आजादी के बाद राजनीतिक के प्रपंच में फंस कर हिंदी राष्ट्र भाषा तो नही बना पाई, लेकिन राज्यभाषा का गौरव जरूर प्राप्त कर पाई। आज आजादी के बाद जब विदेशी राजनेता, नमस्ते, आदि हिंदी में वाचन करते है। आज हिंदी सम्पूर्ण देश में संपर्क भाषा बन चुकी है। कश्मीर से कन्याकुमारी, आसाम से लेकर गुजरात तक आपको हिंदी बोलने समझने वाले मिल जायेंगे। आज डिजिटल युग ने हिंदी में कई कंटेंट क्रिएटर्स को बढ़ावा दिया है। आज विदेशी भी हिंदी में अपने यूट्यूब चौनल, ब्लॉग आदि बनाना पसंद करते है। हिंदी में सबसे ज्यादा सुनने वाला संगीत लॉन्च किया जाता है। हिंदी विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। फिजी, मरीशस, त्रिनिदाद, आदि देशों में हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है। आजकल युवा भी हिंदी में जो देशी भाषा है उसका प्रयोग करते देखे जाते है जो हिंदी को बढ़ावा दे रहा है। हिंदी की शब्द संपदा भी पिछले कई सालों में अत्यंत समृद्ध हुई है। आज भारत के प्रधान मंत्री यूएनओ, जी7, जी2०, आदि समूहों में वक्तव्य प्रस्तुत करते समय तथा विदेशी भूमि पर भी हिंदी भाषा में ही भाषण आदि देते है। जिससे विदेशियों में भी हिंदी के प्रति सम्मान प्रकट होता है। अन्य भाषाओं को देखा जाए तो इतना विशाल साम्राज्य सिर्फहिंदी का ही है। आज अमेरिकन, रसियन, जपनीज आदि क्रिएटर हिंदी में विडियोज ब्लॉग आदि बनाना ज्यादा पसंद कर रहे है। इस तरह यह बढ़ता हुआ असर अग्रेजियत को कम कर रहा है।

मैं हिंदी हूं

मैं पहनू सतरंगी चुनरी मेरे
माथे पर बिंदी है मैं हिंदी हूं
राष्ट्र प्रेम और भाईचारे की प्रतीक
मैं तो अपनी हिंदी हूं।
उत्तर से दक्षिण को जोड़ू पूरब से
पश्चिम को जोड़ू मैं तो अपनी हिंदी हूं।
मैं गाउ मैं बोलूं मैं प्रेम की
रसधार बहाती हूं मैं तो अपनी हिंदी हूं।
मैं जयशंकर की कमायनी दिनकर की
रश्मिरथी हूं मैं तो अपनी हिंदी हूं ।
मैं सबके दिलों पर राज करती
सब के मन की बात करती
मैं तो अपनी हिंदी हूं।
राष्ट्र के कामकाज की भाषा
विदेशों में भी अपनी पहचान
है मैं तो अपनी हिंदी हूं ।

विभा कुमारी सिन्हा
जमशेदपुर

अजीत यादव

अपने को जानो

महान दार्शनिक कन्फ्यूसियस ने कहा है कि महान व्यक्ति शक्ति को अपने भीतर खोजते हैं, जबकि कमजोर लोग दूसरों का मुंह ताकते दिखाई पड़ते हैं। राजनीतिक सिद्धांतकार सिडनी ने कहा था कि भगवान उन्ही की मदद करता है जो स्वयं की मदद करते हैं। वास्तव में मनुष्य अकेला नही है। उसके कण कण में भैतिक प्रकृति की असीम शक्ति धारण किये हुए कोटि कोटि परमाणुओं का सैन्य दल मौजूद रहता है। प्रत्येक जीवाणु में अनन्त शक्ति विद्यमान है। मानवीय काया में निरन्तर इसी शक्ति की हलचलें अभिव्यक्त होती रहती हैं। अध्यात्मवेत्ता महापुरुषों का मानना है कि आत्मा अक्षय ऊर्जा का विपुला भंडार है, जो किसी भी तरह से नष्ट नही किया जा सकता है। वेद का ऋषि इसी सत्य को कहता है,ष्तमेष विद्वान न विभाय मृतयोष अर्थात जो स्वयं को जान लेता है वह मृत्यु से भी नही डरता । भला ऐसा व्यक्ति हताश कैसे हो सकता है?

वस्तुत: हमारे भीतर अनेक गुप्त शक्तियां सोई पड़ी हैं परन्तु हम उन योग्यताओं व क्षमताओं का पता ही नही लगा पाते और दीन दुखियों से जीवन जीते चले जाते हैं। ईश्वर ने अनेक दिव्य शक्तियां देकर हमें संसार में भेजा है कम से कम हम अपनी शक्ति को पहचाने और प्राप्त शक्ति का दुरुपयोग न करें। आप जो भी काम कर रहें हैं उससे हजारों गुना अधिक कार्य करने की शक्ति और सामर्थ्य आप में विद्यमान है। जो कार्य आप करने की सोंच रहें हैं उसे आज से ही प्रारंभ कर दीजिए। अपनी समस्त शक्तियां उसमें एकाकार कर दीजिए। यह क्षण आपके जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षण है। वास्तव में आप एक विराट व्यक्तित्व के मालिक है।

महान विचारक इब्सन का सुप्रसिद्ध कथन है-शक्तिशाली मनुष्य वह है जो अकेला है। कमजोर वह है जो दूसरों पर निर्भर है। अकेले का अर्थ है आत्मनिर्भर अर्थात जिसे अपनी शक्ति पर अटूट विश्वास है। वह अपनी जिम्मेदारियों का सहजता से ही निर्वाह करने में सक्षम है । वह अपने विश्वास की शक्ति के चुम्बकत्व से बाहर के साधनों को आसानी से खींच लेता है। मनुष्य की समूची प्रगति उसके व्यक्तित्व पर निर्भर करती है। व्यक्तित्व की दुनिया हमारे भीतर से ही प्रस्फुटित होती है जो कि हमारे विचारों और भावनाओं से होकर गुजरती है। यदि हमारे विचार और भावनाओं का स्तर ऊंचा है तो हम विपरीत परिस्थितियों में भी नहीं डिगते हैं। भीतर प्रसन्नता है तो बाहर भी मस्ती बनी रहती है। यह सब भीतर की दुनिया पर निर्भर है। जिसके लिए बाहर की दुनिया ही सब कुछ है वह अंतरात्मा की पुकार को प्राथमिकता न दे सकेगा। भारत के ऋषि चिन्तन को मनोवैज्ञानिक चिंतन कहना चाहिए जिसने मानव के व्यवहार एवं अंतराल का भली भांति विश्लेषण कर जीवन को आत्मकेंद्रित करने की एक ऐसी प्रणाली विकसित की थी जिसे आध्यात्म मनोविज्ञान नाम देना सर्वथा युक्तिसंगत है। हम इसी विज्ञान के आधार पर ही अपनी भीतरी शक्ति को पहचान सकेंगे और जीवन में अभ्युदय एवं नि:श्रेयस की सिद्धि कर पाएंगे

शिक्षा के लिए अनुशासित होना आवश्यक: स्वामी चिन्मयानंद

एस एस कालेज में दीक्षारम्भ कार्यक्रम से हुआ शैक्षणिक सत्र का शुभारंभ

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय के विज्ञान संकाय की ओर से नवीन सत्र में प्रवेशित विद्यार्थियों एवं नवागंतुक एन.सी.सी. कैडेटों के लिए दीक्षारम्भ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना, स्वागत गीत के साथ हुआ। डॉ कविता भटनागर के द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। विज्ञान संकाय के सहसंकायाध्यक्ष डॉ आलोक कुमार सिंह ने स्वागत भाषण के माध्यम से अतिथियों का अभिनंदन किया। इस मौके पर मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद ने कहा कि विद्याध्ययन से पूर्व दीक्षारम्भ भारतीय संस्कृति की प्राचीन परंपरा है। इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को अभिप्रेरणा से अभिसिंचित करके उन्हें महाविद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं एवं संसाधनों से परिचित कराने का कार्य किया जाता है। शिक्षा का उद्देश्य स्वयं को जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है। इसके लिए अनुशासन एक अनिवार्य शर्त है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लेफ्टिनेंट कर्नल विजय कुमार मिश्र ने कहा कि विद्यारंभ हेतु अनुशासन प्रथम शर्त है। विज्ञान का विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफ्ल तभी हो सकता है

जबकि वह पूर्ण गंभीरता एवं तन्मयता के साथ अपने कर्म के प्रति समर्पित रहे। उन्होंने कहा कि हमारी प्रथम पहचान हमारा देश है।महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो आर के आजाद ने नवागंतुक विद्यार्थियों को उनकी नवीन कक्षा एवं पाठ्यक्रम हेतु शुभकामनाएं देते हुए कहा कि पूर्ण परिश्रम के साथ अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी मूल्यों के साथ साथ अपने चहुंमुखी विकास पर ध्यान केंद्रित करें। कार्यक्रम में बीएससी फाइनल ईयर की टॉपर प्रिया तिवारी, एमएससी भौतिक विज्ञान की टॉपर कनक सिंह एवं एमएससी रसायन विज्ञान की टॉपर अलका वर्मा को पुरस्कृत किया गया। डॉ शिशिर शुक्ला के संचालन में हुएकार्यक्रम में हर्ष पाराशरी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस दौरान अमित गंगवार, राजनंदन सिंह राजपूत, डॉ संदीप दीक्षित, चंदन गोस्वामी, सत्येंद्र कुमार सिंह, नितिन शुक्ला, मंजीत कुमार सिंह, प्रशांत शर्मा आदि का सहयोग रहा।

'यूनिटी' ने बुजुर्गों के बीच मनाया स्थापना दिवस, कराया भोजन, गौवंशों की सेवा की

विनोबा सेवा आश्रम में कार्यक्रम का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन को खुशहाल बनाने के लिए गत दस वर्षों से समाज सेवा के क्षेत्र में तन, मन,धन से समर्पित तथा अग्रणी भूमिका निभाने वाली संस्था 'यूनिटी' आज अपना दसवां स्थापना दिवस घर परिवार से दूर वृद्धाश्रम में एकाकी जीवन जी रहे बुजुर्गों के बीच मनाया। इस अवसर पर संस्था की पदाधिकारियों ने गौसेवा भी की। संस्था की संरक्षक डा. संगीता मोहन के नेतृत्व में 'यूनिटी' संस्था की महिलाएं बरतारा स्थित विनोबा सेवा आश्रम पहुंची, यहाँ उन्होंने आश्रम में संचालित वृद्धाश्रम में रह रहे बुजुर्ग महिला पुरुषों के साथ बातचीत कर उनके सुखदुख को साझा किया। इसके उपरांत संस्था की ओर से वृद्धाश्रम में रह रहे लोगों के लिए दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गई जिसे संस्था की पदाधिकारियों ने स्वयं अपने हाथ से परोस कर बुजुर्गों को खिलाया। इस दौरान विनोबा सेवा आश्रम में संचालित गौशाला में संस्था की टीम ने गौसेवा की और गौवंशों को गुड़ चना आदि खिलाया।इस मौके पर संस्था की संरक्षक डा.

संगीता मोहन ने कहा कि गत दस वर्षों से 'यूनिटी' संस्था समाज सेवा के क्षेत्र में सक्रिय है, संस्था का प्रयास रहता है कि हर जरुरतमंद वंचित, शोषित तक पहुँच कर उसकी हर संभव मदद की जाए। अध्यक्ष एकता अग्रवाल ने कहा कि हमारा प्रयास रहता है कि समाज के अंतिम पायदान पर खड़ा व्यक्ति भी एक खुशहाल जीवन व्यतीत कर सके। कार्यक्रम में सचिव शैली गुप्ता, अल्पना अग्रवाल, प्रीति अग्रवाल, वर्तिका कलानि, अर्चना मोदी व विनोबा सेवा आश्रम की सचिव विमला बहन का विशेष योगदान रहा।

वेषभूषा प्रतियोगिता में सान्वी रहीं अव्वल

शाहजहांपुर (लोक पहल)। शहर की भारद्वाज कालोनी स्थित श्री बाबा भोलेनाथ मंदिर पर आयोजित श्रीकृष्णोतव पर हुई वेषभूषा प्रतियोगिता में सान्वी सक्सेना प्रथम, प्रियांशु द्वितीय और माधव व काशमी तीसरे स्थान पर रही। इस मौके पर श्रीबाबा भोलेनाथ मंदिर समिति की ओर से अतिथि भाजपा विधायक चेतराम, नगरायुक्त संतोष शर्मा और भाजपा के जिला महामंत्री नवनीत पाठक को समिति के डा. डीएस माथुर, आशीष जौहरी, अध्यक्ष शिवदत्त मिश्रा,

सचिव कुलदीप दीपक, ध्रुव सक्सेना, संजय मिश्रा आदि ने अंगवस्त्र भेंटकर सम्मानित किया। बच्चों ने राधा कृष्ण, हनुमान, मकरध्वज, शिव आदि के स्वरूप धारण किए। मोहित कन्नौजिया और उनकी टीम ने देर रात तक भजन कीर्तन कर श्रद्धालुओं को भक्ति की मंदाकिनी में गोते लगवाए। जान्हवी सक्सेना द्वारा बनाई गई रंगोली की सभी ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की। अनिल और आराधना ने राधा कृष्ण की फूलों की होली खेली। निर्देशन संजीव उर्फसोनू ने किया। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका निधि मिश्रा, सुमन पाठक , इला सक्सेना ने निभायी। इस मौके पर पार्षद नीतू सिंह, डा. नीरज अग्रवाल, डा. पुनीता अग्रवाल, अग्रवाल, विनोद सक्सेना, श्याम मोहन सक्सेना मौजूद रहे।

बिजि बीज स्कूल में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जन्माष्टमी का पर्व

शाहजहांपुर (लोक पहल)। शहर के साउथ सिटी स्थित बिजि बीज प्री स्कूल में जन्माष्टमी उत्सव हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। कृष्ण लीलाओ को दर्शाती सुन्दर झांकी के समक्ष राधा कृष्ण आरती से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सभी बच्चे राधा और कृष्ण के भेष में अत्यंत मनोहारी प्रतीत हो रहे थे। इस अवसर पर श्रीनाथ जी के मंगल दर्शन कराये गए। इसकी पूरी रूपरेखा स्कूल की प्रधानाचार्या वसु गोयल ने तैयार की। इस रूप को केजी के वैदिक गुप्ता ने जीवंत किया। केजी के बच्चों ने गोविन्दा आला रे, और वहीं कक्षा प्रथम और द्वितीय ने संयुक्त रूप से मैया यशोदा और श्री कृष्ण

गोविंद हरे मुरारी पर थिरक कर कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिये। कार्यक्रम के अंत में बच्चों ने दही हान्डी फोड़ कर खूब नाच गाने के बीच जन्माष्टमी के पर्व मनाया। प्रिन्सिपल वसु गोयल ने बच्चों को भगवान कृष्ण के बताये मार्ग पर सदैव चलने की शिक्षा भी दी ! इस अवसर पर स्कूल निदेशक रोहित गोयल, आस्था सक्सेना, मंजु कुशवाहा, तृप्ति रस्तोगी, शक्ति मिश्रा, सुनीति सिन्हा, संध्या शुक्ला, दीपाली गुप्ता, देवान्शी मेहरोत्रा और गॉसिया आदि उपस्थित रहे।

धरोहर

आजादी की लड़ाई और साहित्य का तीर्थस्थल है 'गांधी पुस्तकालय'

सुशील दीक्षित 'विचित्र'

शाहजहांपुर के चौक में कोतवाली के पास खड़ी एक इमारत अपने में तमाम सुनहरी यादें समेटे हुए है। कभी इसकी छत पर बने भवन में आजादी की लड़ाई की योजनाएं बनाई जाती थीं जिन पर गांधीवादी योद्धा अमल करते हुए अंग्रेज सरकार के मार्ग में बाधाएं खड़ी करते थे। आजादी के बाद इसमें जहां समय-समय पर होने वाले चरखा यज्ञ के आयोजन में देश के बड़े-बड़े नेता अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहे और प्रख्यात साहित्यकार अपनी कविताओं कहानियों के रंग बिखेरते रहे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि गांधीजी की हत्या के शोक में शुक्रवार की शाम आज भी पुस्तकालय बंद रहता है,क्योंकि हत्या शुक्रवार की शाम की गई थी। यह दो मंजिला बिल्डिंग कब बनी होगी इसके बारे में ठीक-ठीक कहना मुहाल है। अलबत्ता पुस्तकालय भवन के स्वामित्व के लिए चल रहे एक मुकदमें के दौरान गांधी पुस्तकालय के सचिव तथा गीतकार अजय गुप्त ने जब इसके कागजों की तलाश की तो काफी खोजबीन के बाद वे बख्शी खाना में मिले जिन पर एक में 1276 फसली सन और दूसरे में 1345 फसली सन्ध पड़ा था।

कागजों में स्वामित्त के स्थान पर सरकार बहादुर दर्ज था। अगर हम फसली सन को ईसवी सन्ध मंग तब्दील करें तो यह क्रमशः 1878 और 1937 होंगे। यह स्वामित्व भूमि का था अलबत्ता 1878 में यह बिल्डिंग अपने स्थान पर नहीं खड़ी थी,लेकिन इससे यह साबित होता है कि जमीन पर सरकार का दावा था। बिल्डिंग के पुरातन काल को समझने के लिए इसके आसपास के इंफ्रास्ट्रक्चर को समझना जरूरी होगा। बिल्डिंग से ठीक लगे हुए कोतवाली परिसर में खड़ी कांच नामक नगर की पहली मस्जिद का निर्माण 1647 में हुआ था। मस्जिद के सामने खाली मैदान पड़ा था। इसके सामने से गुजरने वाली सड़क कच्ची थी। सड़क के पूरब की ओर पड़ी जमीन जिस पर वर्तमान में सदर तहसील है जमींदार शिवकुमार मिश्र की थी। 1813 में शाहजहांपुर जिला बना तो कुछ समय बाद जिला अस्पताल की स्थापना के लिए अंग्रेज कलेक्टर ने जमीन की तलाश शुरू की। शिवकुमार मिश्र ने शहर के बीच स्थित यह भूमि अस्पताल के लिए दान कर दी। कुछ समय बाद 1894 में जिला अस्पताल मोहल्ला मोहम्मदजई में तत्कालीन नए भवन में शिफ्ट हो गया और यह भवन खाली हो गया। कुछ समय बाद सरकार ने इसे तहसील के लिए आवंटित कर दिया। इसमें तहसील लगने लगी और मुंसिफकी अदालत के लिए कोतवाली से लगी खाली जमीन पर एक दोमंजिला इमारत बनवायी गई जिसमें एक हाल, हाल के आगे बरामदा, पीछे मुंसिफ के आराम करने का कमरा बनाया गया। इसके दो जीने थे। एक आगे की ओर फरियादियों के लिए और दूसरा पीछे की ओर मुंसिफके आने जाने के लिए। आगे चलकर मुंसिफ की अदालत भी तहसील परिसर में चली गई। यह भवन कुछ समय तक खाली पड़ा रहा।

पिछली सदी के चौथे दशक में आजादी का आंदोलन तेज हो गया था। शाहजहांपुर में भी कांग्रेस कमेटी सक्रिय थी। इसी दौरान कांग्रेस के कार्यालय के लिए जगह की तलाश शुरू हुई जो इसी भवन पर आकर समाप्त हुई। कांग्रेस नेताओं ने नगर पालिका के माध्यम से इसे मामूली किराए पर ले लिया। कुछ ही दिन बाद कांग्रेस कार्यालय में टेलीफोन भी घनघनाने लगा। आजादी की लड़ाई की धार देने की योजनाएं लगभग एक दशक तक बनाई जाती रहीं,लेकिन यहां कार्यालय अधिक समय तक नहीं रहा। उन दिनों बाबूराम बाथम वैश्य गोटे के सबसे बड़े व्यापारी थे। गुदड़ी बाजार में उनकी बड़ी सी दुकान थी जिस पर उनके ही हम नाम बाबूराम गुप्ता मुनीम थे तथा अग्रिम पंक्ति के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। उनके तत्कालीन कलेक्टर से प्रगाढ़ संबंध थे। उनकी प्रेरणा से एक पुस्तकालय खोलने की योजना बनी। यह भवन श्री गांधी पुस्तकालय ट्रस्ट को लीज पर दे दिया गया। 4 अक्टूबर 1948 को श्रीगांधी पुस्तकालय खोला गया जिसका उद्घाटन तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष पुरुषोत्तम दास टंडन ने चरखा यज्ञ करके किया। पुस्तकालय में समय-समय पर तमाम राजनीतिक और साहित्यिक कार्यक्रम होते रहे। मुख्यमंत्री चंद्रभान गुप्त समेत तमाम बड़े कांग्रेसी नेता यहां आते रहे। श्रीगुप्त समेत कई समाजसेवियों और महत्वपूर्ण लोगों को यहां बुलाकर सम्मानित भी किया गया। आगे चलकर गांधी पुस्तकालय साहित्यकारों का पुण्यतीर्थ बन गया। मशहूर कथाकार हृदयेश, राष्ट्रीय कवि राजबहादुर विकल, दामोदर स्वरूप विद्रोही, डॉ. गिरिजानंदन त्रिगुणायत आकुल, अग्निवेश शुक्ल आजीवन इससे जुड़े रहे। समय-समय पर पुस्तकालय में साहित्यिक आयोजनों में देश के प्रसिद्ध कवियों का जमावड़ा लगा रहता। इसी दौरान प्रसिद्ध कवि बाबा नागार्जुन पुस्तकालय आए। उनके सम्मान में एक काव्यगोष्ठी आयोजित की गई। इस गोष्ठी में बाबा नागार्जुन ने तमाम कविताओं के साथ एक कविता सेना के रिटायर्ड घोड़े की व्यथा पर 'अभिनय' सुनाई थी। इस तरह आजादी की लड़ाई जीत कर आजादी के पुरोधाओं द्वारा रोपे गए ज्ञान के इस वट वृक्ष गांधी पुस्तकालय ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना शुरू किया। यह सिलसिला अभी भी थमा नहीं है। अब पुस्तकालय अपने नए भवन गांधी पार्क में शिफ्ट हो गया है और भवन फिर खाली हो गया है। वर्तमान में भवन खस्ताहाल है। पुरातत्व विभाग को चाहिए कि वह इस बिल्डिंग का संरक्षण कर इसे कवि साहित्यकारों के संग्रहालय का रूप दे, क्योंकि इसके नष्ट होने के मतलब आजादी की लड़ाई और साहित्य के एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल का नष्ट होने जैसा होगा।

इरफान अहमद अंसारी का राष्ट्रीय उर्दू शिक्षक पुरस्कार के लिए चयन

शाहजहाँपुर (लोक पहल)। जूनियर हाईस्कूल खिरिया रसूलपुर के प्रधानाध्यापक इरफान अहमद अंसारी को राष्ट्रीय उर्दू शिक्षक पुरस्कार के लिए चयनित किया गया है। इरफान अहमद को विद्यालय के तौकीर अली अंसारी, मनोज कुमार, वसीम अली, रेशमा यादव, रेशू सिंह, ब्रह्मानंद, रूबी देवी, डॉ. जीए कादरी, डॉ. मुहम्मद साजिद खान, डॉ. मुहम्मद अरशद खान, असगर यासिर, हमीद खिजर, राशिद हुसैन राही ने इरफान अहमद को बधाई दी। उन्हें यह पुरस्कार 29 अक्टूबर 2023 को दिल्ली में आयोजित समारोह में दिया जाएगा।

समर्पण

सूर्यदीप कुशवाहा

सरल शब्दों में समर्पण का अर्थ है अपने आपको मन व बुद्धि से पूर्णरूपेण किसी ऐसे ईष्ट को निरूस्वार्थपूर्वक सौंप देना, जिस पर पूर्ण श्रद्धा व विश्वास हो अथवा बिना किसी तर्क व संदेह किए बराबर किसी भी उपयोग हेतु ज्यों का त्यों स्वयं को किसी के हवाले कर देना। समर्पण में संदेह व तर्क की कोई गुंजाइश नहीं होती। जिसको समर्पण किया जाता है यदि उस पर संदेह व स्वार्थ है तो वहां समर्पण नहीं होता, बल्कि वह केवल नाम मात्र दिखावा है जो सच्चे समर्पण से कोसों दूर होता है।

समर्पण में श्रद्धा का महत्व ज्यादा होता है। जिस पर श्रद्धा होती है, उसी पर समर्पण होता है। जिस पर श्रद्धा नहीं होती, उस पर समर्पण भी नहीं होता। जब श्रद्धा किसी व्यक्ति पर होती है और उसके प्रति समर्पण होता है तो समर्पण करने वाले को विशेष सुख मिलता है। जब श्रद्धा भगवान के प्रति होती है और व्यक्ति भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण कर देता है तो उसे विशेष आनंद मिलता है। इसीलिए योगी आदमी भगवान से योग लगाते हैं और अपने आप को पूर्ण समर्पित कर देते हैं तो वे परम सुख, शांति और परमात्मा का आनंद लेते हैं। हमें लगता है कि हमने आत्मसमर्पण कर दिया है, यहां तक कि शारीरिक प्रेम में भी, जब हम अपनी इच्छा को दूसरे व्यक्ति की इच्छा में डुबो देते हैं। हम अपनी खुशी को दूसरे व्यक्ति की खुशी में मिलाने की कोशिश करते हैं। हम हमेशा वही करने का प्रयास करते हैं जो दूसरे व्यक्ति को प्रसन्न करता है, और कभी भी खुद पर जोर देने या दूसरे व्यक्ति को हमारे साथ समायोजित करने का प्रयास नहीं करते हैं। हम हमेशा खुद को दूसरे व्यक्ति की इच्छा के अनुसार समायोजित करते हैं। प्यार में हम हमेशा यही करना पसंद करते हैं, यहां तक कि इस दुनिया में भी। हम हमेशा सहयोग करने और खुद को दूसरे व्यक्ति के प्रति समर्पित करने का प्रयास करते हैं।

समर्पण करना, एक बहुत ऊँचा लक्ष्य है जिसे हम इसी जीवनकाल में प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन जैसा कि हजूर कहते हैं, हमें इसे सामान्य जीवन जीते हुए करना होगा। यह आसान नहीं है क्योंकि ऐसा लगता है कि हमारे आस-पास की हर चीज हमारा ध्यान नेत्र केंद्र से हटाने के लिए बनाई गई है। लेकिन गुरु हमें जीने के लिए चार व्रतों की एक रूपरेखा देते हैंय और यदि हम इन सिद्धांतों के भीतर बने रहें, तो हम सफ्ल हो सकते हैं। प्रतिज्ञाओं का पालन मार्ग का एक अनिवार्य हिस्सा है। हर बार जब हम अपनी प्रतिज्ञाओं के आधार पर सचेत चुनाव करते हैं, तो हम पथ और गुरु के बारे में सोचते हैं। सेवा करना, किताबें पढ़ना, दिन के दौरान जब हमारा मन व्यस्त न हो तो सिमरन करना और अपने मालिक को याद करना हमारे मन को नियंत्रित रखता है और मालिक को खुश करता है। सक्रिय रूप से वह करना चुनना जो हमारे स्वामी को प्रसन्न करता है, उनके प्रति अपना प्रेम दर्शाना है, भक्ति प्रदर्शित करना है, यह दर्शाना है कि हम समर्पण करना चाहते हैं। समर्पण में श्रद्धा का महत्व ज्यादा होता है। जिस पर श्रद्धा होती है, उसी पर समर्पण होता है। जिस पर श्रद्धा नहीं होती, उस पर समर्पण भी नहीं होता। जब श्रद्धा किसी व्यक्ति पर होती है और उसके प्रति समर्पण होता है तो समर्पण करने वाले को विशेष सुख मिलता है। जब श्रद्धा भगवान के प्रति होती है और व्यक्ति भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण कर देता है तो उसे विशेष आनंद मिलता है। इसीलिए योगी आदमी भगवान से योग लगाते हैं और अपने आप को पूर्ण समर्पित कर देते हैं तो वे सुख, शांति और परमात्मा का आनंद लेते हैं। समर्पण क्यों करना चाहिए? क्योंकि जब तक समर्पण नहीं होता, तब तक सच्चा सुख नहीं मिलता। सच्चे सुख की प्राप्ति के लिए समर्पण किया जाता है। समर्पण यदि कपटपूर्ण है तो सुख भी दिखावा मात्र ही होगा। समर्पण से ही परमात्मा सहाय बनते हैं। मीरा ने समर्पण यह कहकर कि 'मेरो तो गिरधर गोपाल बस दूसरो न कोई' किया तो मीरा को पिलाया जाने वाला जहर परमात्मा ने अमृत में बदल दिया। अत: मनुष्य को परम श्रद्धेय परमात्मा के प्रति ही पूर्ण समर्पित होकर अपने जीवन को सरस तथा मधुर बनाने का पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिए जो मनुष्य को पूर्णता की ओर भी ले जाता है और पूर्णता की अनुभूति भी कराता है।

एक राष्ट्र एक चुनाव के साथ जिले में जनप्रतिनिधि के लिए हो केवल एक पद

डा. रूपक श्रीवास्तव

देश में एक राष्ट्र एक चुनाव के साथ-साथ जन प्रतिनिधियों के लिए केवल एक ही पद होना चाहिए, एक जिले में जनप्रतिनिधियों के लिए विकास कार्य हेतु अलग-अलग पद का होना वित्त के अनुचित प्रयोग को दर्शाता है। यह सरकारी बजट पर वित्तीय अनुशासनहीनता का तांडव प्रदर्शित होता है।

यदि जनप्रतिनिधियों का काम अपने-अपने क्षेत्र में विकास करना ही होता है तो फिर सांसद के अतिरिक्त अन्य लोकतांत्रिक पद पर वेतन देकर सरकारी पैसे का दुरुपयोग की आवश्यकता क्या है। विधानसभा, विधान परिषद सदस्य की आवश्यकता क्या है। भारत सरकार की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में एक सांसद पर एक साल में औसतन 72 लाख रुपए खर्च आता है। वही विधानसभा की कार्रवाई का 1 घंटे का खर्च 40 लाख रुपए आता है। इसके अतिरिक्त महापौर, नगर पालिका परिषद अध्यक्ष, पार्षद, सभासद, जिला पंचायत अध्यक्ष, नगर पंचायत अध्यक्ष,ग्राम प्रधान आदि पदों पर हर वर्ष लाखों रुपए का खर्च होता है। इन पदों पर यदि कोई जनप्रतिनिधि एक बार चुनाव जीतता है। तो उसकी आजीवन पेंशन बनी रहती है और दूसरा वह चुनाव जीत कर हारता है तो उसकी दूसरी पेंशन भी पुरानी पेंशन के ऊपर लागू हो जाती है इस प्रकार भारत सरकार पर अतिरिक्त खर्च आता है विदेश की तर्ज पर अगर भारत में भी एक जनप्रतिनिधि हो तो भारत सरकार को कई प्रकार से आर्थिक लाभ हो सकते है। और यदि देश में जनप्रतिनिधियों का हर जिले में एक पद निश्चित होगा तो इससे सरकारी कोष की बचत का प्रयोग सरकार उद्यमिता विकास में निवेश करके देश में आर्थिक विकास, रोजगार की दर में वृद्धि आदि संभावनाओं को बल मिलेगा।

चांदी सोना एक तरफ, तेरा होना एक तरफ

साहित्यिक संस्था 'सुवास' ने आयोजित किया कवि सम्मेलन

लोक पहल

लखनऊ। महानगर सचिवालय कॉलोनी स्थित क्लब में संपन्न साहित्यिक संस्था 'सुवास' के तत्वावधान में काव्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। काव्य सम्मेलन में मुख्य अतिथि ज्ञान प्रकाष ठाकुर ने अपने प्रख्यात गीत 'चांदी सोना एक तरफ, तेरा होना एक तरफ' से कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया। वही कार्यक्रम में जनपद शाहजहांपुर की कवयित्री और साहित्यकार पूर्णिमा बेदार श्रीवास्तव ने अपनी प्रतिनिधि कविता 'धूल झाड़ कर जब पढ़ी यादों जड़ी किताब, हर पन्ने पर मिल गए सूखे हुए गुलाब' को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्रदेश के बड़े-बड़े साहित्यकार और साहित्य प्रेमी मौजूद थे। देर शाम तक चले इस कार्यक्रम के लोकप्रिय गीतकार ज्ञान प्रकाश ठाकुर मुख्य अतिथि रहे। वरिष्ठ साहित्यकार नरेंद्र भूषण ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। पर्यावरण प्रेमी और समाजसेवी सेविका नेहा खरे स्नेहा विशिष्ट अतिथि रही। कार्यक्रम का संयोजन गजलकार श्रवण कुमार ने व समन्वयन लोकेश त्रिपाठी ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन विपुल मिश्रा ने किया।

हार्टफुलनेस के 'हर दिल ध्यान, हर दिन ध्यान' अभियान का शुभारंभ

लोक पहल

कानपुर। श्री रामचंद्र मिशन, हार्टफुलनेस संस्थान की ओर से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर उत्तर प्रदेश में संस्था के ग्लोबल गाइड कमलेश डी पटेल के मार्गदर्शन में 'एकात्म अभियान का शुभारंभ हृदय ग्राम भोजला से शुरू किया गया। जिसका उद्देश्य हर दिल ध्यान, हर दिन ध्यान, हर घर ध्यान को साकार करना है।

कार्यशाला के दिन शिव कुमार अपने और टीम के सदस्यों का परिचय देते हुए संस्था श्री रामचंद्र मिशन व 'हार्टफुलनेस' का परिचय दिया। उन्होंने जिज्ञासु से ओपन सत्र में गीता रामायण के संदर्भ के साथ हृदय और ध्यान की व्याख्या दी। युवा छात्र छात्राओं को उनकी शिक्षा, कैरियर, ना चाहते हुए तनाव, और इस तनाव के दुष्परिणाम से बचने में कैसे आप लोगो के लिए लाभकारी है। उमाशंकर ने ध्यान के पूर्व की तैयारी षिथलीकरण करवाया। प्रीति अग्रवाल ने ध्यान करवाया। दूसरे दिन जिज्ञासुओ के प्रश्नोत्तर के बाद उमाशंकर ने सफाई के बारे में बताते हुए कहा कि कैसे हम अपने संस्कारों को साफ करते हुए, ईश्वरीय कृपा को आकर्षित करते है। तीसरे दिन प्रार्थना को शब्द सह उसके मर्म को समझाते हुए हृदय आधारित ध्यान करवाया गया। कार्यक्रम का संचालन सुमन श्रीवास्तव व प्रदीप सक्सेना ने किया। माता प्रसाद खरे ,मान सिह, विकास श्रीवास्तव,डी आर सिरोठिया,सुमित बागरे, नीरज, प्रतिमा श्रीवास्तव, सीमा शुक्ला, मधु श्रीवास्तव, कृष्णा श्रीवास्तव, कुसुम खरे, सुशील कुमार, मोहित रायकवार तथा हृदय ग्राम भोजलावासी शामिल हुए।

बनारस की साड़ियों पर दिखेगी काशी के घाटों और मन्दिरों की कला

लोक पहल

वाराणसी। यूपी की अर्थव्यवस्था एक ट्रिलियन डॉलर बनाने और पारंपरिक कला को मंच देने के लिए 21 से 25 सितंबर तक ग्रेटर नोएडा में ट्रेड शो आयोजित किया जा रहा है। इसमें दुनियाभर के खरीदार आएंगे।

अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बनारसी सिल्क की साड़ियों को पहचान दिलाने के लिए नोएडा में आयोजित होने वाले इंटरनेशनल ट्रेड शो में इनकी प्रदर्शिनी लगाई जाएगी। बनारस की छड्ढा को बिखेरने के लिए साड़ियों में काशी के मन्दिरों और घाटों की तस्वीर दिखाई देंगी। साड़ी पर नंदी और त्रिशूल की बुनाई की गई है। संस्कृत में मातृ भूमि वंदन के श्लोक लिखे गए हैं। इन साड़ियों की प्रदर्शनी नोएडा के यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो में लगाई जाएगी। इसके जरिये अंतरराष्ट्रीय बाजार में छाने की तैयारी है। बनारसी साड़ी के कारोबारी करघे के ताने-बाने से देश की संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय फ्लक पर लाने के लिए खास बुनाई करा रहे हैं। कारीगरों का कहना है कि बनारसी साड़ियों की पहचान देश-दुनिया में ब्रांड के तौर पर है। अब इसे खास पहचान दी जा रही है। वहीं, जूट व कपड़ों के कारोबार को भी अंतर्राष्ट्रीय बाजार देने के लिए उत्पादों को तैयार किया जा रहा है।

कायस्थ महासभा ने शरद राही को किया सम्मानित

बरेली (लोक पहल)। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा की ओर से आयोजित संगत पंगत कायस्थ महाकुंभ में महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोज सक्सेना ने शाहजहांपुर के डॉ. शरद राही को संगीत व संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया। उन्हें चांदी का मुकुट, अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एसआईएस कंपनी के संस्थापक व पूर्व सांसद एसएन सिन्हा तथा उ.प्र.सरकार के राज्य मंत्री डॉ. अरूण कुमार सक्सेना थे। जिलाध्यक्ष आलोक सक्सेना, महामंत्री आलोक प्रधान, कोषाध्यक्ष श्याम दीप सक्सेना के कुशल संयोजन में हुए कायस्थ महाकुंभ में पूरे प्रदेश के चित्रांश विभूती शामिल हुए। इस मौके पर ख्यातिलब्ध कवि व गीतकार विष्णु सक्सेना व सर्वेश अस्थाना ने अपनी रचनाओं से लोगों का मन मोह लिया। वहीं बिहार की सुप्रसिद्ध गायिका श्रष्टि सिन्हा के गीतों को भरपूर तालियां मिली।

महिला कल्याण विभाग ने हिंदी दिवस पर जागरुकता कार्यक्रम का किया आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। हिन्दी दिवस के अवसर पर महिला कल्याण विभाग की ओर से आर्य महिला डिग्री कॉलेज में मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के कैंप का आयोजन किया गया। प्रभारी महिला कल्याण अधिकारी अमृता दीक्षित ने मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना की इंटर उत्तीर्ण कर स्नातक में प्रवेश ली गयी पात्र 5 छात्राओं को चिन्हित करके आवेदन के लिए सहयोग किया। विभागीय समस्त योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। छात्रों को 108, 112, 181, 1098, 1090 आदि टोल फ्री नम्बरों के बारे में जानकारी दी गई। एनएसएस प्रभारी रानू दुबे ने छात्राओं को अधिक से अधिक मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना में आवेदन करने के लिए अपील की। वन स्टॉप सेंटर से काउंसलर अर्चा मिश्रा ने छात्राओं को वन स्टॉप सेंटर की कार्यप्रणालियों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम प्रभारी महिला कल्याण अधिकारी अमृता दीक्षित, काउंसलर अर्चा मिश्रा, एनएसएस प्रभारी रानू दुबे, रितु शर्मा, प्रज्ञा वर्मा इत्यादि स्टाफमौजूद रहा।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक-सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।